ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक १६ मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अगस्त (द्वितीय) २०१६

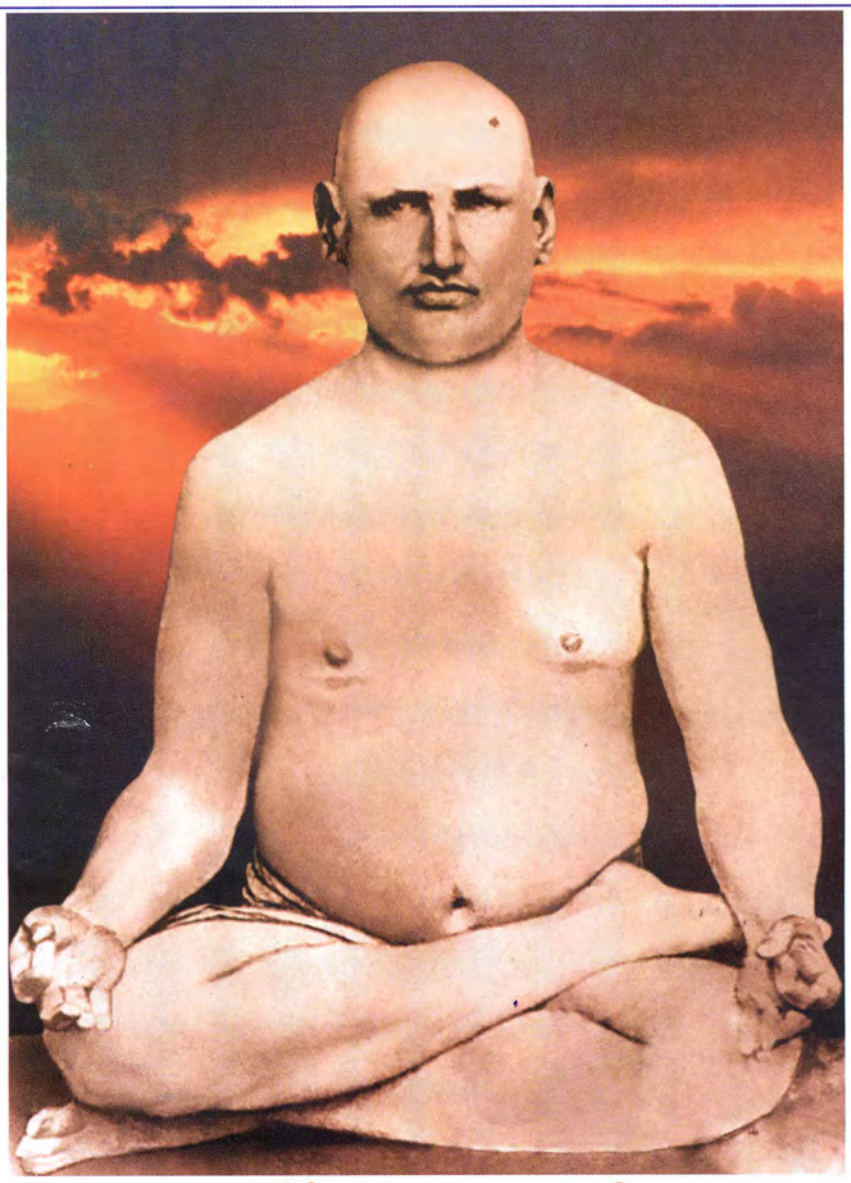

महर्षि दयानन्द सरस्वती

राज्यपाल ने दिया सुझाव...

विवि में स्थापित होगी दयानन्द शोध पीठ

विश्वविद्यालय देगा 1 करोड़ रुपए

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

अजमेर. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में दयानन्द शोध पीठ की स्थापना होगी। विवि के सातवें दीक्षांत समारोह में बोलते वक्त राज्यपाल कल्याण सिंह ने विवि से दयानन्द सरस्वती पर शोध पीठ स्थापित करने का आग्रह किया। राज्यपाल ने दयानन्द सरस्वती को वेदों का प्रचारक व अंधविश्वासों का झंकझोरने वाला शख्स बताते हुए दयानन्द सरस्वती पर शोध पीठ स्थापित करने की बात कही।

दीक्षांत के बाद पत्रिका से विशेष बातचीत के दौरान विवि के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी ने पत्रिका को बताया कि कुलाधिपति के आग्रह को आदेश मानते हुए उन्होंने विवि में शोध पीठ स्थापित करने का निर्णय ले लिया है। इसके लिए 1 करोड़ की राशि भी शोध पीठ को प्रदान की जाएगी। शोध पीठ की स्थापना इसी सत्र में कर दी जाएगी। जबकि अगले सत्र से यह पीठ प्रारम्भ हो जाएगी।

अजब-गजब संयोग

दयानन्द सरस्वती शोध पीठ की स्थापना को लेकर अजब संयोग घटा। दयानन्द सरस्वती के नाम पर विवि और उन्हीं पर शोध पीठ। पीठ की घोषणा भी विवि के स्थापना दिवस के अवसर पर हुई। आज से 29 वर्ष पूर्व वर्ष 1987 में 1 अगस्त को विवि की स्थापना हुई थी और इसी दिन शोध पीठ की घोषणा हुई। वहीं इस दिन विवि का सातवां दीक्षांत भी आयोजित हुआ।

अजमेर से है अहम जुड़ाव

दयानन्द सरस्वती का अजमेर से अहम जुड़ाव है। अजमेर दयानन्द सरस्वती का निर्वाण स्थली है। साथ ही अजमेर को दयानन्द की तपोभूमि भी कहा जाता है। अजमेर की पावन धरती पर दयानन्द ने वेदों का प्रचार-प्रसार किया था।

२ अगस्त २०१६ को राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित समाचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १६
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: श्रावण शुक्ल, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-
विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.। **एक प्रति का मूल्य** - पाउण्ड-३
एक प्रति का मूल्य - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अगस्त द्वितीय २०१६

अनुक्रम

१. अजमेर वि.वि. में दयानन्द शोधपीठ	सम्पादकीय	०४
२. प्रतिक्रिया		०६
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
४. अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम....	शिवनारायण उपाध्याय	१४
५. १३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		१८
६. प्राणोपासना - ३	तपेन्द्र विद्यालङ्कार	१९
७. वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय		२३
८. अदीना स्याम शरद: शतम्	श्री गजानन्द आर्य	२४
९. जिज्ञासा समाधान-११७	आचार्य सोमदेव	३०
१०. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		३२
११. पुस्तक परिचय	आचार्य सोमदेव	३३
१२. संस्था-समाचार		३५
१३. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३८		३९
१४. योग साधना शिविर-संस्मरण		४१
१५. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

अजमेर विश्वविद्यालय में दयानन्द शोधपीठ राज्यपाल की घोषणा

इस मास के प्रथम दिन एक अगस्त को सम्पन्न हुये दीक्षान्त समारोह में राजस्थान के राज्यपाल महामहिम कल्याणसिंह जी ने अपने दीक्षान्त भाषण में महर्षि दयानन्द के कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द वेदों के प्रचारक और समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों को झकझोरने वाले थे, उस समाज सुधारक की स्मृति में स्थापित इस महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में महर्षि के कार्य और जीवन पर अनुसन्धान करने के लिये एक शोधपीठ की स्थापना होनी चाहिए।

राज्यपाल, जो पदेन राज्य के सभी विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति होते हैं, उनके आग्रह को आदेश मानते हुए विश्वविद्यालय ने शोधपीठ स्थापित करने का निर्णय ले लिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी ने इस बात की घोषणा की और निर्णय की जानकारी देते हुए बताया कि इसके लिये विश्वविद्यालय की ओर से एक करोड़ रुपये की राशि प्रदान की जायेगी। इसी सत्र से शोधपीठ की स्थापना कर दी जायेगी तथा अगले सत्र से शोधपीठ का कार्य प्रारम्भ हो जायेगा।

जब नरेन्द्र मोदी प्रधानमन्त्री बने और अजमेर को विकसित करने और यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने की घोषणा हुई, तभी से परोपकारिणी सभा ने अजमेर को महर्षि के स्मारक के रूप में स्थापित करने के अनेक सुझाव सरकार और जिलाधीश के मार्गदर्शन में स्थापित समिति के सम्मुख रखे थे। विश्वविद्यालय के कुलपति से भेंट कर विश्वविद्यालय में शोधपीठ स्थापित करने का प्रस्ताव दिया था। जब गत वर्ष अनेक महापुरुषों की स्मृति में शोधपीठ स्थापित हुए, तब भी सभा ने प्रयास किया था, परन्तु बात निर्णय तक नहीं पहुँच सकी। सभा द्वारा शोधपीठ की स्थापना के लिये प्रधानमन्त्री मोदी जी को पत्र लिखा गया, उनका निर्देश भी विश्वविद्यालय को मिला, परन्तु प्रस्ताव क्रियान्वित नहीं हो पाया। इस वर्ष मोदी जी के साथ-साथ महामहिम राज्यपाल की सेवा में भी निवेदन किया गया और उनसे अनुरोध किया कि आप राज्यपाल होने के नाते विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं तथा आप ऋषि दयानन्द की मान्यता और सिद्धान्तों के मर्मज्ञ और मानने वाले हैं, आप द्वारा यह शुभ कार्य किया जाना चाहिए। यह एक सुखद संयोग है कि महामहिम ने पत्र का उत्तर दीक्षान्त समारोह में पीठ की स्थापना का परामर्श देकर दिया। मान्य कुलपति ने उनके निर्देश को स्वीकार करते हुए, उसी दिन विश्वविद्यालय में दयानन्द शोधपीठ की स्थापना का निर्णय लेकर शोधपीठ प्रारम्भ करने की घोषणा कर दी। सभा के प्रयास को सफलता मिली। सारा आर्यजगत् मोदी जी, महामहिम राज्यपाल कल्याणसिंह जी तथा विश्वविद्यालय के कुलपति कैलाश सोडानी जी का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता है।

किसी व्यक्ति विशेष के सामाजिक, शैक्षणिक एवं शोधपरक योगदान को देखते हुए, उनके जीवन एवं कार्य को समाज के सामने लाने के लिये तथा उनके कार्यों का महत्त्व और उपयोगिता को समझाने के लिये, उनके नाम पर शोधपीठ स्थापित करने की परम्परा है। विश्वविद्यालयों में शोधपीठ की स्थापना जहाँ व्यक्ति के कार्य और महत्त्व का मूल्यांकन के लिये की जाती है, वहीं किसी भी विभाग में अध्ययन के लिये किसी व्यक्ति विशेष के नाम से भी पीठ की स्थापना की जाती है। इसी प्रकार कोई व्यक्ति अपने या किसी के नाम से विशेष अध्ययन के लिये शोधपीठ की स्थापना कराते हैं, जैसे ऑक्सफोर्ड में वोडन चेयर है, जिस पर रहकर मैक्समूलर ने वेद भाष्य के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य किया। ऋषि दयानन्द का समाज-सुधार, देश, संस्कृति, इतिहास, शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनके विचारों और कार्यों से देश का गौरव बढ़ा है। समाज की विषमताओं पर चोट पहुँची है। इस देश के निवासियों में स्वाभिमान और देश के प्रति गौरव का भाव बढ़ा है।

ऋषि दयानन्द की शिक्षा पद्धति और विचार का प्रसार करने के लिये ऋषि के जीवन काल से ही प्रयास प्रारम्भ हो गये थे, पण्डित गुरुदत्त जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. संस्थान की स्थापना हुई, परन्तु स्वयं गुरुदत्त को ही इससे निराशा हाथ लगी। दूसरा प्रयास गुरुकुल कांगड़ी के रूप में

हुआ। बहुत वर्षों तक यहाँ वेद के विद्वान् तैयार हुये, परन्तु आज वेद और आर्ष पद्धति दोनों ही गौण हैं व वर्तमान पाठ्यक्रमों की भरमार है तथा ऋषि दयानन्द कहीं बहुत पीछे छूट गये प्रतीत होते हैं। आर्य समाज के संगठन की आपसी लड़ाई ने संस्था को व्यर्थ कर दिया है।

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों, कार्य और जीवन पर अनुसन्धान करने के लिये आर्य वैदिक विद्वान् एवं गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी के प्रस्ताव से सर्वप्रथम पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में दयानन्द पीठ की स्थापना डिपार्टमेण्ट ऑफ वैदिक स्टडीज के नाम से की गई, जिसमें डॉ. रामानाथ वेदालंकार तथा डॉ. भवानीलाल भारतीय जी के माध्यम से अच्छा कार्य हुआ। आजकल वहाँ कोई स्वतन्त्र अध्यक्ष नहीं है। संस्कृत विभाग के प्रो. वीरेन्द्र अलंकार उस शोधपीठ का कार्य सम्भाल रहे हैं, गतिविधियों के माध्यम से सक्रियता बनाये हुए हैं।

दूसरा प्रयास कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हुआ था, वहाँ जब तक विद्यानिवास मिश्र रहे, उनके निर्देशन में भी अच्छा कार्य हुआ। उनके जाने के बाद वहाँ कार्य समाप्त प्राय: है। यह शोधपीठ बाद में रोहतक में स्वामी दयानन्द विश्वविद्यालय में स्थानान्तरित कर दी गई। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में भी दयानन्द शोधपीठ है, परन्तु वहाँ भी कोई स्वतन्त्र अध्यक्ष नहीं है। संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार ही इसको सम्भाल रहे हैं। जहाँ विश्वविद्यालय के कुलपतियों के लिये यह कार्य उनकी प्राथमिकता का नहीं है, वहीं आर्यसमाज में संगठन नहीं है, ना ही उनकी इस प्रकार की सोच है, अत: इस दिशा में जो कार्य होना चाहिए था, वह नहीं हुआ।

पुराने विद्वानों ने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को लगवाने का प्रयास किया। इसमें आधुनिक समझे जाने वाले तथा पौराणिक लोगों ने यथासम्भव विरोध किया। यह एक प्रकार से ज्ञान से शत्रुता का ही उदाहरण है, फिर भी अनेक विश्वविद्यालयों में वेद के पाठ्यक्रम में सहायक ग्रन्थों में ऋषि दयानन्द की 'वेद भाष्य भूमिका' लगाई जा सकी है, इसमें मेरठ, अजमेर और कानपुर विश्वविद्यालयों के नाम उल्लेखनीय हैं। रोहतक विश्वविद्यालय में वेद वर्ग में भूमिका और वेदभाष्य लगाये गये हैं तथा रामानुज तथा दयानन्द दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाता है। कर्मकाण्ड की पुस्तकों में संस्कार विधि को भी स्थान दिया गया है। ऋषि दयानन्द के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका दार्शनिक चिन्तन है। उसको जितना प्रकाश में लाने की आवश्यकता है, उतना कार्य नहीं हुआ, तो भी नये-पुराने विद्वानों ने इस पर प्रशंसनीय कार्य किया है- आचार्य उदयवीर शास्त्री, आर्यमुनि, तुलसीराम स्वामी, गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी सत्यप्रकाश। वर्तमान में डॉ. जयदेव वेदालंकार ने इस पर पर्याप्त कार्य किया है। कुछ विश्वविद्यालयों ने दयानन्द दर्शन को अपने पाठ्यक्रम में स्थान भी दिया है, परन्तु जो मौलिकता और प्रखर चिन्तन ऋषि दयानन्द ने किया है, उसका यथार्थ स्वरूप विश्वविद्यालयों के लेखन और विचारों में परिलक्षित नहीं होता। ऋषि दयानन्द के सर्वांगीण व्यक्तित्व एवं विचार पर अनुसन्धान करने के लिये अधिकाधिक विश्वविद्यालयों में शोधपीठ की स्थापना और दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का पाठ्यक्रम में समावेश कराने की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में आर्ष पद्धति को स्थान दिलाने के लिये प्रथम पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने प्रयास करके सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में आर्ष विभाग को स्थापित कराया था, यह पाठ्यक्रम प्राचीन व्याकरण के नाम से अष्टाध्यायी पद्धति से पढ़ाया जाता है। इसी प्रकार स्वामी ओमानन्द जी के प्रयास ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में आर्ष पाठ विधि को स्वीकृति दिलाकर उसके पाठ्यक्रम और उपाधियों को मान्यता दिलाई। इस विश्वविद्यालय में यह पाठ्यक्रम गुरुकुल स्कीम नाम से चलता है।

विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्वामी दयानन्द के विचार तथा अधिक-से-अधिक शिक्षा संस्थानों में ऋषि दयानन्द के कार्य एवं विचारों पर शोध कार्य हो, ऐसा प्रयास आर्यसमाज को करना चाहिए। ऋषि दयानन्द ऐसे महापुरुष हैं, जो मनुष्य मात्र को विद्या का अधिकारी मानते हैं। सबको विद्या का अधिकार देते हैं तथा अपने विवेक से निर्णय करने का सामर्थ्य उत्पन्न करने की प्रेरणा करते हैं।

वेद का सन्देश है- मनुष्य को सदा ज्ञान के अनुसार ही आचरण करना चाहिए तथा कभी भी ज्ञान विरोधी नहीं होना चाहिए। वेद का अधिकार ज्ञान का अधिकार है। वेद कहता है-

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि।।

- धर्मवीर

प्रतिक्रिया

१. आपकी सेवा में धन्यवाद कि पत्र बहुत विलम्ब से लिखने के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। आप द्वारा प्रेषित 'परोपकारी' पाक्षिक पत्रिका सन् २०१२ से ही हमें समय पर प्राप्त होती रहती है। इस प्रतिष्ठित पत्रिका को म्याँमार के प्रतिष्ठित आर्य सज्जनों में फोटो कॉपी कर वितरित करता रहता हूँ। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सन् २०१२ में दिल्ली नगर में सम्पन्न होने के एक दिन पहले सायंकाल मिलना-जुलना हुआ था। आपने हमें यह आश्वासन दिलाया कि आप निश्चिन्त रहिए, मैं आप लोगों की सेवा में परोपकारी पत्रिका भेजता रहूँगा। ठीक आपने वैसा ही किया है। आज तक यह पत्रिका हमें सदैव मिलती आ रही है। इस पवित्र कार्य के लिए आपको कोटिश धन्यवाद है। इस शुभ समाचार को श्री विनय आर्य द्वारा जब वे म्याँमार देश में १९ से २२ मई सन् २०१६ को आए थे, तब मैं उन्हें भी आपको साधुवाद देने के लिए आग्रह किया था।

- चन्द्रदत्त वर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा म्याँमार

२. आचार्य श्री सोमदेव जी निवेदन है कि 'परोपकारी' जून (प्रथम) २०१६ में आपने महाभारत सम्बन्धी बहुत अच्छा समाधान (शंका-निवारण) किया है। वैदिक विद्वानों को सत्य का ही प्रचार करना चाहिये। आर्य जगत् ०६-१२ दिसम्बर २०१५ में 'एक या पाँच' शीर्षक में लेखक (वैदिक विद्वान्) ने द्रौपदी को पाँचों पाण्डवों की पत्नी सिद्ध करने के लिए पौराणिक कथा वाचकों की शैली का प्रयोग किया है। वैदिक विद्वान् का मैं आदर करता हूँ, पर उनके इस परिश्रम को व्यर्थ मानता हूँ, क्योंकि हिन्दू समाज में वही असत्य तो प्रचारित हो रहा है। उपरोक्त लेख के प्रत्युत्तर में वैदिक विद्वान् पूज्यपाद श्री इन्द्रजित् देव (यमुनानगर) ने 'आर्य प्रतिनिधि' में लिखा। महाभारत के प्रमाण देकर उन्होंने केवल युधिष्ठिर को ही द्रौपदी का पति सिद्ध किया है, यही वास्तविकता है, इसी का प्रचार होना चाहिये। आपने भी सत्य लिखा है।

द्रौपदी के पाँच पुत्रों के विषय में आपने युक्ति तो ठीक ही दी है कि वे पुत्र युधिष्ठिर के ही होंगे। पर श्री देव जी ने सभापर्व (महाभारत) अध्याय ७१ के २८ व २९वें श्लोक के अनुसार लिखा है कि द्रौपदी का एक ही पुत्र था, प्रतिविन्ध्य। उसी के भविष्य की चिन्ता करते हुए द्रौपदी ने धृतराष्ट्र से वर माँगा था, न कि कथित पाँच पुत्रों के।

ददासिचेद् वरं मह्यं वृणोमि भरतर्षभ।
सर्वधर्मानुगः श्रीमानदासोऽस्तु युधिष्ठिरः।। २८
मनस्विनमजानन्तो मैवं ब्रूयुः कुमारकाः।
एष वै दास पुत्रो हि प्रतिविन्ध्यं ममात्मजम्।। २९

द्रौपदी बोली- भरतवंश शिरोमणे! यदि आप मुझे वर देते हैं तो मैं यही माँगती हूँ कि सम्पूर्ण धर्म का आचरण करने वाले राजा युधिष्ठिर दास भाव से मुक्त हो जाएँ। जिससे मेरे मनस्वी पुत्र प्रतिविन्ध्य को अज्ञानवश दूसरे राजकुमार ऐसा न कह सकें कि यह 'दासपुत्र' है।''

यहाँ स्पष्ट है कि पहले वरदान में द्रौपदी ने केवल युधिष्ठिर का दासभाव से छूटना माँगा था, ताकि उन दोनों का पुत्र प्रतिविन्ध्य 'दासपुत्र' न कहलाए। यदि द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की पत्नी होती और पाँचों से उसके पाँच पुत्र होते, तो अकेले युधिष्ठिर की मुक्ति से यह सम्भव नहीं था। यहाँ द्रौपदी ने केवल प्रतिविन्ध्य का नाम लिया है। इससे सिद्ध होता है कि द्रौपदी को पाँचों की पत्नी प्रचारित करने वालों ने शेष चार पुत्रों की भी कल्पना की है। अन्यथा द्रौपदी उनका भी नाम लेती, यदि वे युधिष्ठिर के होते और यदि शेष पाण्डवों के होते, तो पहले ही वरदान में सभी भाइयों (पाँचों पाण्डवों) की मुक्ति माँग लेती। अतः द्रौपदी केवल युधिष्ठिर की रानी थी और उसका एकमात्र पुत्र प्रतिविन्ध्य था।

- राजेशार्य आट्टा, साढौरा, यमुनानगर, हरि.-१३३२०४

३. आदरणीय श्री धर्मवीर जी, सादर नमस्ते। 'परोपकारी' पत्रिका का ३ वर्ष से मैं सदस्य हूँ। पत्रिका बराबर आती है, कार्य आपका सन्तोषजनक है। श्री धर्मवीर जी से मिलना ३५-४० वर्ष पहले शिवगंज, जि. सिरोही, राज. में ही आर्यसमाज में मिलना हुआ था। पत्रिका को लगभग पूरी पढ़ता हूँ, धर्मवीर जी का लेख अवश्य पूरा पढ़ता हूँ।

- दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, गंजबाजार, ऊँझा, गुज.

४. आदरणीय धर्मवीर जी, सादर प्रणाम। जून महीने की 'परोपकारी' पत्रिका में आपका सम्पादकीय 'वैदिक धर्म प्रचार की शैली क्या हो?' यह लेख पढ़ा, आप विद्वान् हैं, अपने विचार व्यवस्थित प्रकट किये गये हैं। आपके विचारों से सहमत हूँ।

- धर्मपाल पंढरीनाथ, मलवाड़े, सीताराम नगर, लातूर

५. माननीय व्यवस्थापक महोदय, मैंने अपने पते के बदलाव का पत्र हाल ही में भेजा था और आपने जिस हार्दिकता से 'परोपकारी' भेजने की व्यवस्था की, उसके लिए आप सभी आर्यजनों को हार्दिक कृतज्ञता समर्पित करना मैं अपना धर्म मानता हूँ। धन्यवाद। परोपकारी के मिलने से मैं कितना खुश हूँ, यह कहना कठिन है। पुनश्च धन्यवाद।

- डॉ. सम्पतराव पां. जाधव, मु.पो. कामेरी, ता. वालवा, जि. सांगली, महा.

आर्य समाज क्या है?

जहाँ सत्य सदा सर्वोपरि है,
वेदों में निष्ठा गहरी है,
आर्य समाज सदैव से ही,
धर्म राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है।

(१)

संस्थापक जिसके दयानन्द थे
गुणी शिष्य गुरु विरजानन्द के
गुरु ऋण को चुकाने की खातिर
तजे जिसने सभी सुख आनन्द थे
गूंजी एक बार न शांत हुई, ओ३म् नाम की जो स्वर लहरी है,
आर्य समाज सदैव से ही, धर्म राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है।

(२)

जहाँ पत्थर के भगवान् नहीं
पूजे जाते इन्सान वहीं
जहाँ तर्क रहित धाराणाओं को
मिल सकता कोई स्थान नहीं
जहाँ सफलता तक पहुँचने की, निर्धारित राह इकहरी है,
आर्य समाज सदैव से ही, धर्म राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है।

(३)

जातिगत जहाँ कोई भेद नहीं
वंचित पढ़ने से वेद नहीं
सम्मान गुणी के गुणों का जहाँ
हो अल्प गुणी तो खेद नहीं
सब साथ चलें और साथ बढ़ें, भावना सुखदायी सुनहरी है,
आर्य समाज सदैव से ही, धर्म राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है।

(४)

भारत माता जब जकड़ी थी
दासता की दृढ़ जंजीरों से
खाई थी कसम आजादी की
बिस्मिल व भगत आर्यवीरों ने
लेखराम श्रद्धानन्द लाजपत के, बलिदानों की छाप अति गहरी है
आर्य समाज सदैव से ही, धर्म राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है।

(५)

जहाँ यज्ञ हवन और संध्या के
संस्कार बच्चों को मिलते हैं
आशीष से वृद्धों गुरुजनों की
सदा द्वार सफलता के खुलते हैं
बरसों की पुरानी इमारत ये, दस नियमों की नींव पे ठहरी है
आर्य समाज सदैव से ही, धर्म राष्ट्र का सच्चा प्रहरी है।

- अशोक प्रभाकर, जी-१६, महेशनगर, अम्बाला छावनी

ऋषि मेला २०१६ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला ४,५,६ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१६ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र-विश्व ने माना:- इन्हीं दिनों एक लोकप्रिय हिन्दी दैनिक में एक विचारक का इस विषय पर लेख प्रकाशित हुआ। विनीत केवल शीर्षक ही पढ़ सका। लेख कहीं रखकर खो बैठा। उस लेखक के लेख के शीर्षक का तो भाव यह था कि सृष्टि में मनुष्य को ही कर्म करने या निर्णय लेने की स्वतन्त्रता है। देखा जाये तो यह कथन एक आंशिक सत्य है। वर्षों पूर्व लेखक ने मनोविज्ञान की पुस्तकों में पढ़ा था, You can take the horse to water but you cannot make him take the water. अर्थात् आप घोड़े को जल के पास तो ले जा सकते हैं, परन्तु उसे धक्के से पानी नहीं पिला सकते। प्यास होगी तो वह अपनी इच्छा से जल पियेगा। इससे सिद्ध हुआ कि जीव मात्र को निर्णय लेने की-कर्म करने की स्वतन्त्रता है।

एक समय था, जब आर्यसमाजी विद्वानों को इस विषय पर शास्त्रार्थ करने पड़ते थे। मत-पंथों के ग्रन्थों में तो सब कुछ ईश्वरेच्छा अथवा अल्लाह की मर्जी का सिद्धान्त मिलता है। रही सही कमी शैतान द्वारा पाप करवाने की मान्यता से पूरी हो जाती है।

महर्षि दयानन्द ने धार्मिक जगत् में जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त रखकर इस विषय में कई शास्त्रार्थ किये। इससे पूरे विश्व में हलचल मच गई। उसी युग में 'विकासवाद' का भौतिक दर्शन पूरे विश्व में चर्चित हुआ। इस मत ने भी परोक्ष रूप में जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता को स्वीकार किया। Law of natural selection प्राकृतिक निर्वाचन का नियम विकासवाद का एक आधारभूत सिद्धान्त है। selection (चुनाव) करना कर्त्ता की स्वतन्त्रता को मानना है। जड़ प्रकृति तो विचार शून्य, इच्छा शून्य व क्रिया शून्य है। चेतन सत्ता ही चुनाव कर सकती है।

विश्व प्रसिद्ध लेखक श्री अनवर शेख ने यजदान (भगवान्) व शैतान के संवाद को काव्य में अत्युत्तम शैली में प्रस्तुत करते हुए महर्षि दयानन्द के एतद्विषयक दर्शन का डंका बजाया है। परोपकारी में इससे पहले भी लिखा जा चुका है कि पूरे विश्व की न्यायपालिका (Judiciary) महर्षि के घोष 'स्वतन्त्र कर्त्ता' को स्वीकार कर रही है। अब शैतान व भगवान् को पाप (शर) व पुण्य (खैर) के लिये उत्तरदायी नहीं माना जाता। वैदिक दर्शन के विश्वव्यापी प्रभाव को समझकर आर्य समाज वेद प्रचार में पूरे दल बल से लगेगा तो यश मिलेगा। यह कार्य स्कूलों के बस का नहीं है। स्कूलों-कॉलेजों में वैदिक दर्शन को कौन जानता-मानता है?

सेवा कर्म कमाते रहे:- आर्य समाज के इतिहास से सेवा करने की कुछ स्वर्णिम घटनायें दी गईं। पाठकों ने कुछ ऐसे प्रेरक प्रसंग और देने का अनुरोध किया है। दिल्ली क्षेत्र के अथक व सफल प्रचारक स्वामी धर्मानन्द जी (करोलबाग वाले) जीवन की अन्तिम वेला में बहुत रुग्ण व असमर्थ हो गये। आर्य समाज शताब्दी महोत्सव पर मैंने श्री आचार्य विरजानन्द जी झज्जर को अपने एक दो साथियों सहित उनकी सेवा करते देखा। गर्म जल के लोटे भर-भर कर उन पर डालते जाते थे। वे हाथ हिलाने में असमर्थ थे। श्री विरजानन्द उनके शरीर को मल-मलकर स्नान करवाते मैंने देखे। कौन कहता है कि आर्य समाज अपने सपूतों व सेवकों को असमर्थ होने पर पूछता नहीं? जिन्होंने आप कभी किसी की सेवा नहीं की, वे आर्य समाज के अपयश के लिए ऐसा दुष्प्रचार करते हैं।

कुँवर सुखलाल जी आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर पधारे। तब श्री पं. सत्यपाल जी पथिक उस समाज के पुरोहित थे। ग्रीष्म ऋतु थी। मैं पूज्य कुँवर जी से मिलने व उन्हें सुनने कादियाँ से वहाँ पहुँचा। आर्य मन्दिर में प्रवेश करते ही एक हैण्ड पम्प हुआ करता था। कुँवर साहब हड्डियों का ढाँचा-सा थे, पर उनके कण्ठ में वही पहले-सा जादू था।

पथिक जी नल को चलाकर जल की बाल्टी भर कर बड़ी, श्रद्धा से कुँवर जी को ऐसे स्नान करवा रहे थे, जैसे कोई संस्कारी पोता दादा को मल-मल कर स्नान करवाता

है। मैंने कहा, "पथिक जी, आप जल निकालें, अब मैं स्नान करवाता हूँ।" आपने कहा, "नहीं! आपके वस्त्र भीगेंगे। आप जल निकालकर देते जायें। स्नान मैं ही करवाऊँगा।" कुँवर जी के शरीर पर बर्छी, भालों व लाठियों के किये गये एक-एक घाव के निशान के बारे में पथिक जी पूछते जाते थे-यह निशान कब का है? कैसे घाव हुआ? कुँवर जी बताते जाते और हम सुन-सुनकर आनन्द रस का पान करते गये। मित्रो! सेवा करना सीखो। आपने कभी किसी पूज्य पुरुष की सेवा नहीं की तो आप यह विषैला प्रचार न किया करें कि सब आप जैसे ही हैं।

महात्मा नारायण स्वामी जी के दो ऑपरेशन:- एक बार महात्मा नारायण स्वामी जी का लखनऊ में एक बड़ा ऑपरेशन हुआ। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी व श्रद्धेय उपाध्याय जी ने प्रबल अनुरोध करके महात्मा जी से कहा- हमें पहले ऑपरेशन की तिथि बतायें। हमारे आने पर ही ऑपरेशन करवायें। महात्मा जी को उनकी इच्छा का सन्मान करना पड़ा।

देश विभाजन से पूर्व महात्मा जी का एक बड़ा ऑपरेशन लाहौर में हुआ था। क्या आप जानते हैं कि पूज्य महाशय कृष्ण जी के विशेष अनुरोध पर महात्मा नारायण स्वामी जी को लाहौर में ऑपरेशन करवाना पड़ा था। तब भी उपाध्याय जी आदि अनेक नेता लाहौर जाते रहे।

क्या आप जानते हैं कि सन् १९५५ में पूजनीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का एक बड़ा ऑपरेशन मुम्बई में हुआ था। श्री सेठ प्रताप भाई जी ने बहुत सेवा की थी। महाराज तो ईश्वर के विधि-विधान को जानकर ऑपरेशन करवाने को कतई तैयार नहीं थे, परन्तु श्री महाशय कृष्ण जी के हठ के सामने स्वामी जी को झुकना पड़ा। महाशय कृष्ण जी का कथन था कि हम महात्मा नारायण स्वामी जी को मुम्बई न दिखा सके। अब उस चूक को नहीं दोहरायेंगे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने यह कहकर महाशय जी का कहा मान लिया कि आपने कभी हमारा कहा नहीं टाला, अब आपकी यही इच्छा है तो आप मुम्बई दिखा लीजिये। आर्य समाज पर अपने पूज्य पुरुषों को अन्तिम वेला में छोड़ने का दोष देना उचित नहीं है। अपवाद हो सकते हैं। अपनी कमियों को दूर करना तो हमारा कर्त्तव्य है ही। पाठक चाहेंगे तो इस प्रकार की सेवा की पचासों घटनायें क्रमश: देता रहूँगा। यही तो सच्चा इतिहास है। मनुष्य ऐसे प्रेरक प्रसंगों से बहुत कुछ सीखता है।

उत्तर दिया जाय:- मिर्जाइयों द्वारा नेट का उपयोग करके पं. लेखराम जी तथा आर्यसमाज के विरुद्ध किये जा रहे दुष्प्रचार का उत्तर देना मैंने उ.प्र. के कुछ आर्य युवकों की प्रबल प्रेरणा से स्वीकार कर लिया। मेज-कुर्सी सजा कर घरों में बैठकर लम्बे-लम्बे लेख लिखने वाले तो बहुत हैं, परन्तु जान जोखिम में डालकर विरोधियों के प्रत्येक प्रहार का प्रतिकार करना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं। वास्तव में इस बारे में नया तो कुछ भी नहीं। वही घिसी-पिटी पुरानी कहानियाँ, जिनका उत्तर पूज्य पं. देवप्रकाश जी के 'दाफआ ओहाम' खोजपूर्ण पुस्तक तथा मेरे ग्रन्थ 'रक्तसाक्षी पं. लेखराम' तथा मेरी अन्य पुस्तकों में भी समय-समय पर दिया जा चुका है।

अब की बार परोपकारी व किसी अन्य पत्रिका में इस विषैले प्रचार का निराकरण नहीं करूँगा। 'रक्तसाक्षी पं. लेखराम' ग्रन्थ का संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण प्रेस में दिया जा चुका है। मैं जानता हूँ कि विधर्मियों से टकराना जान जोखिम में डालने जैसा काम है। गत ६१ वर्ष से इस कार्य को करता चला आ रहा हूँ। अब भी पीछे नहीं हटूँगा। पं. धर्मभिक्षु जी, पं. विष्णुदत्त जी, पं. सन्तरामजी, पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. निरञ्जनदेव जी से लेकर इस लेखक तक मिर्जाइयों की कुचालों व अभियोगों का स्वाद चखते रहे हैं। श्री रब्बे कादियाँ जी (पं. इन्द्रजित्देव के कुल के एक धर्मवीर) पर तो मिर्जाइयों ने इतने अभियोग चलाये कि हमें उनकी ठीक-ठीक गिनती का भी ज्ञान नहीं।

सन् १९९६ में स्वामी सम्पूर्णानन्द जी के आदेश से कादियाँ में दिये गये व्याख्यान पर जब गिरफ्तारी की तलवार लटकी तो मैंने श्री रोशनलाल जी को कादियाँ लिखा था कि श्री सेठ हरबंसलाल या पंजाब सभा मेरी जमानत दे- यह मुझे कतई स्वीकार नहीं। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज या श्री रमेश जीवन जी मेरी जमानत दे सकते हैं। तब श्री स्वामी सम्पूर्णानन्द जी मेरे साथ जेल जाने को एकदम कमर कसकर तैयार थे। यह सारी कहानी वह बता सकते हैं। हमें फँसाया जाता तो दो-दो वर्ष का कारावास होता।

मेरा व्याख्यान प्रमाणों से परिपूर्ण था सो मिर्जाइयों की दाल न गली।

सिखों में एक सिंध सभा आन्दोलन चला था। सिंध सभा नाम की एक पत्रिका भी खूब चली थी। इसका सम्पादक पं. लेखराम जी का बड़ा भक्त था। उस निडर सम्पादक ने मिर्जाई नबी पर खूब लेखनी चलाई। उसका कुछ लुप्त हो चुका साहित्य मैंने खोज लिया है। रक्तसाक्षी पं. लेखराम ग्रन्थ के नये संस्करण में इस निर्भीक सम्पादक के साहित्य के हृदय स्पर्शी प्रमाण देकर मिर्जाइयत के छक्के छुड़ाऊँगा। जिन्हें मिशन का दर्द है, जाति की पीड़ा है, वे आगे आकर इस ग्रन्थ के प्रसार में प्रकाशक संस्था को सक्रिय सहयोग करें। श्री महेन्द्रसिंह आर्य और अनिल जी ने उत्तर प्रकाशित करने का साहसिक पग उठाया है। श्री प्रेमशंकर जी मौर्य लखनऊ व उनके सब सहयोगी इस कार्य में सब प्रकार की भागदौड़ करने में अनिल जी के साथ हैं।

एक जानकारी देना रुचिकर व आवश्यक होगा कि जब प्राणवीर पं. लेखराम मिर्जा के इल्हामी कोठे पर गये थे, तब सिंध सभा का सम्पादक भी उनके साथ था। नबी के साथ वहाँ पण्डित जी की संक्षिप्त बातचीत-उस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ के प्रत्यक्ष दर्शी साक्षी ने नबी को तब कैसे पिटते व पराजित होते देखा-यह सब वृत्तान्त प्रथम बार इस ग्रन्थ में छपेगा। न जाने पं. लेखराम जी ने तब अपने इस भक्त का अपने ग्रन्थ व लेखों में क्यों उल्लेख नहीं किया? और भी कई नाम छूट गये। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की उपस्थिति में सन् १९९६ के अपने व्याख्यान में सम्पादक जी के साहित्य के आवश्यक अंश मैंने कादियाँ में सुना दिये थे। सम्भवत: उन्हीं से मिर्जाइयों में हड़कम्प मचा था।

उत्तर दो और उत्तर देने की कला सीखो:- राधा-स्वामी सम्प्रदाय वाले लम्बे समय तक बाबा शिवदयाल से महर्षि जी के मन्त्र लेने का प्रचार करते रहे। इस कहानी को गढ़ने वाले ने एक तर्क यह दिया कि सत्यार्थ प्रकाश में उनके मत का खण्डन नहीं है। देर तक आर्य समाज में उनको ऐसा उत्तर न दिया गया जो बोलती बन्द कर दे। पं. चमूपति जी व लक्ष्मण जी की उत्तर देने की शैली का हमारा अभ्यास छूट गया। जालंधर में चमत्कारों पर शास्त्रार्थ में ऋषि ने बाबा शिवदयाल की भी समीक्षा की-यह प्रमाण तत्काल दिया जाना चाहिये था। राधा-स्वामी मत के तीन गुरुओं की पुस्तकों में ऋषि की चर्चा है। खण्डन भी है, परन्तु मन्त्र लेने की कहानी किसी गुरु को न सूझी। जब परोपकारी में यह उत्तर दिया गया तो फिर इसका प्रतिवाद न हो सका।

सिख अब तक ज्ञानी दित्तसिंह से ऋषि के शास्त्रार्थों में पराभव का प्रचार कर रहे हैं। पंजाब में लोग उत्तर चाहते हैं। कोई सभा व लेखक डर के कारण--- पं. निरञ्जनदेव जी की प्रेरणा से मैंने उत्तर देते हुए लिखा कि दित्तसिंह स्वयं को सिख नहीं, वेदान्ती लिखता है। किसी भी ऋषि विरोधी पत्र-पत्रिका ने दित्तसिंह से शास्त्रार्थ होने की घटना नहीं दी। कई लेखक उत्तर देने का जोखिम नहीं ले सकते। दिल्ली में एक ने एक ट्रैक्ट लिखकर अपना पता न देकर श्री संजीव का पता दे दिया। उसने वह कटवा दिया। कहीं मुसलमान न भड़क उठें।

भारत में कंगाली पर पहला भाषण:- ऋषि पहले विचारक थे, जिन्होंने देश की कंगाली पर लिखा। पहले नेता श्यामजी कृष्ण वर्मा थे, जिन्होंने परोपकारिणी सभा के उत्सव पर भारत की कंगाली विषय पर भाषण दिया। इस इतिहास का प्रचार होना चाहिये।

एक भूल का सुधार:- देश के कई नेताओं ने १८५७ के विप्लव की निन्दा में ग्रन्थ लिखे। इसे गदर (Muting) लिखा। ऋषि पहले विचारक थे, जिन्होंने जालंधर में इसे विप्लव कहा। यह घटना पं. लेखराम जी ने दी, फिर हटावट का शिकार हो गई। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में भी दी है। इस इतिहास की सुरक्षा करके उसका प्रचार हो। अमेठी के पं. कन्हैयालाल ने भी विद्रोह पर एक ग्रन्थ लिखा। भूलवश किसी ने हमें सूचना दी कि कन्हैयालाल अलख धारी का ऐसा ग्रन्थ मिला है। यह बताने वाले सज्जन की भूल थी। वह उर्दू नहीं जानता था। देखते ही हमने बता दिया कि यह लेखक तो अमेठी का है। अनजाने में भूल और बात है, इतिहास के नाम पर हदीसें गढ़ना दूसरी बात है।

भूल-सुधार पर बधाई:- आर्य सन्देश में पं. लेखराम

जी पर भ्रामक व घातक लेख छापने की भूल स्वीकार करते हुए सभा के मन्त्री श्री विनय जी ने खेद प्रकट कर दिया। भूल को भूल मानना ही आर्यत्व है। हम उन्हें इस नैतिक साहस पर बधाई देते हैं। पहले तो यह भी कहा गया कि जिज्ञासु जी ने भी तो ऐसा ही लिखा है, फिर इस भूल का भी सुधार कर लिया। धन्यवाद!

महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्मवर्ष:- महात्मा जी के जन्म के वर्ष व आयु पर बोलते हुए इस लेखक ने भ्रम भञ्जन किया तो पं. इन्द्रजीत देव जी ने इस विषय पर कुछ लिखने को कहा। मेरी जानकारी का स्रोत महात्मा जी का स्वलिखित आत्म निवेदन है। इसे सेवक ने १९४६ में पढ़ा और अब भी सुरक्षित कर रखा है। जो देखना चाहे, देख ले। महात्मा जी ने स्वयं इस लेखक को बताया कि महाशय कृष्ण उनसे बड़े थे। महाशय कृष्ण जी ने उन्हें अपने से छोटा लिखा है। महात्मा जी ने लिखा है कि सन् १९०७ में जब वह बीस वर्ष के थे लाहौर आर्यगजट की सेवा में नियुक्त हुए सो उनका जन्म सन् १८८७ का मानना होगा। उनके जन्म को ऋषि के बलिदान वर्ष से जोड़ना इतिहास से अन्याय व महात्मा जी का निरादर है। भ्रम प्रचारकों को भूल पर अड़ना शोभा नहीं देता।

प्रश्न तो अच्छा है:- स्वामी श्रद्धानन्द जी के लेखों में कुछ क्रान्तिवीरों की चर्चा पढ़कर उ.प्र. के एक युवक ने महात्मा हंसराज जी के लेखों में से कुछ ऐसे नाम पूछे हैं। इस सेवक ने महात्मा जी के लेखों व व्याख्यानों पर श्रम तो बहुत किया है, परन्तु ऐसा कोई नाम नहीं मिला। श्री महात्मा जी राजनीति से व राजनेताओं से दूर-दूर ही रहे। उनकी इसमें कतई रुचि नहीं थी। यदि किसी भाई को कुछ ऐसे नामों की जानकारी हो तो वह इस पर प्रकाश डाले। प्रश्न अच्छा है। इस पर प्रकाश पड़ने से लाभ ही होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि आर्य नेताओं के जीवन के इस पहलू पर एक बार फिर सप्रमाण सविस्तार प्रकाश डाला जायेगा। ऐसे नेताओं में महाशय कृष्ण जी को भी हम नहीं भूल सकते।

इतिहास बोलता है और बोलेगा:- हमने ऊपर श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के कंगाली पर दिये गये व्याख्यान का उल्लेख किया है। सम्भव है, किसी लेखक ने कहीं इसकी चर्चा की हो और हमें पता न लगा हो। डेढ़ घण्टा तक विद्वान् वक्ता ने इस विषय पर अपने विचार रखे। यह घटना दिसम्बर सन् १८८७ के अन्तिम दिनों की है। परोपकारिणी सभा के उस उत्सव में भारत भर से दूर-दूर से आर्य भाई-समाजों के प्रतिनिधि आये थे। जहाँ-जहाँ ऋषि जी गये थे, वहाँ से तो विशेष रूप से भक्त श्रद्धालु अजमेर आये।

महर्षि जोधपुर में कई मास तक रहे। वहाँ भी कुछ तो ऋषि भक्त होंगे ही। कौन यह मानेगा कि जोधपुर के सब लोग पाषाण हृदय थे और किसी पर महर्षि का कतई प्रभाव न पड़ा? सन् १८८७ के इस उत्सव का जो वृत्तान्त आर्यगजट आदि पत्रों में प्रकाशित हुआ, उससे तो यही पता चलता है कि जोधपुर से तब एक भी व्यक्ति अजमेर न पहुँचा। वह सामन्ती युग था। प्रतापसिंह के आतंक के कारण एक भी व्यक्ति अजमेर आने का साहस न कर सका। प्रतापसिंह की आत्मकथा में भी तो ऋषि के जोधपुर आगमन पर कोई छोटा-सा अध्याय नहीं। इतिहास बोल रहा है और बोलेगा। हम क्या कहें? क्या करें?

-वेद सदन अबोहर-१५२११६

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

इस शिविर में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक- दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात का सानिध्य प्राप्त होगा।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम की माप तौल का उत्तर

- शिवनारायण उपाध्याय

आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा भेजा गया.लेख 'अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम की माप-तौल' मुझे आज ही प्राप्त हुआ। लेख में आपने वितण्डा और छल का प्रयोग कर व्यर्थ उसका कलेवर बढ़ाकर पाठकों को भ्रमित करने का यत्न किया है।

सृष्टि उत्पत्ति अथवा वेदोत्पत्ति के विषय में स्वामी दयानन्द की मान्यता के विरोध में लिखा गया यह पहला लेख नहीं है। इस विषय पर सर्वप्रथम रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक 'वैदिक सम्पत्ति' में सृष्टि उत्पत्ति का समय १९७२९४९११६ वर्ष (वर्तमान की स्थिति तक) पूर्व माना, परन्तु जान बूझकर उसे समझाने का प्रयत्न नहीं किया। उसके बाद आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने जब वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में पदाधिकारी बने, तब इसी विषय पर एक लेख लिख दिया और चूंकि वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में थे, उनकी गणना को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वीकार कर लिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के साप्ताहिक समाचार-पत्र पर भी उन्हीं की मान्यता के अनुसार तिथि छपने लग गई, परन्तु परोपकारिणी सभा अजमेर ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसके बाद पं. सुदर्शन देव और पण्डित राजवीर शास्त्री ने मिलकर जब ऋग्वेद भाष्य भास्कर प्रकाशित किया तो उसके पृष्ठ २७ पर वेदोत्पत्ति काल विचार पर एक तर्क पूर्ण लेख लिखकर स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों का समर्थन किया। फिर अगस्त २०१२ में बरेली के वैद्य रामगोपाल शास्त्री ने परोपकारी में लेख स्वामी दयानन्द की मान्यता के विरोध में लिखा। अगले माह मुझे उसका विरोध करना पड़ा। फिर स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने उनके पक्ष में एक लेख लिख दिया। मैंने फिर विरोध किया तो स्वामी ब्रह्मानन्द ने टंकारा समाचार पत्र में लेख प्रकाशित करा दिया। मैंने कुल छः लेख लिखे। मामला ठंडा हो गया, परन्तु जून २०१५ में स्वामी ब्रह्मानन्द ने फिर एक लेख स्वामी जी के विरोध में लिख दिया। तब मैंने उसके उत्तर में 'अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम्' लिखकर परोपकारी अजमेर तथा वैदिक संसार इन्दौर को भेजा। यह वैदिक संसार में जनवरी २०१६ तथा परोपकारी में फरवरी २०१६ में छपा। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने भी एक लेख सृष्टि उत्पत्ति पर लिखा है और उसमें उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की एतद् विषय में मान्यता का समर्थन किया है।

आओ, अब हम ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के आधार पर ही इस विषय पर चिन्तन करें और आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा उठाए गए बिन्दुओं पर भी विचार करें। स्वामी जी लेख का प्रारम्भ यहाँ से करते हैं-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

- यजु. ३१.७

(तस्मान् यज्ञात्स.) सत् जिसका कभी नाश नहीं होता। (चित्) जो सदा ज्ञान स्वरूप है..... उसी परब्रह्म से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छंदासि) अथर्व भी, ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं।

प्रश्न- वेदों को उत्पन्न करने में ईश्वर को क्या प्रयोजन था?

उत्तर- जो परमेश्वर अपनी विद्या का हम लोगों के लिए उपदेश न करे तो विद्या से जो परोपकार करना गुण है, सो उसका नहीं रहे।

फिर शतपथ के प्रमाण से कहते हैं, '**अग्नेर्ऋग्वेदो वायो यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेद।** अर्थात् सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।'

वेदानामुत्पत्तौ कियन्ति वर्षाणि व्यतीतानि?

एको वृन्दःषण्णवतिः कोट्योऽष्टौ लक्षाणि द्विपञ्चाशत्-

सहस्त्राणि नव शतानि षट् सप्ततिश्चैतावन्ति १९६०८५२९७६ वर्षाणि व्यतीतानि। सप्त सप्ततितमोऽयं संवत्सरो वर्त्तत इति वेदितव्यम्।।

इसमें स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि वेद एवं जगत् की उत्पत्ति को १९६०८५२९७६ वर्ष व्यतीत हो गए हैं और इस समय ७७ वाँ वर्ष चल रहा है।

प्रश्न- यह कैसे निश्चय हो कि इतने ही वर्ष वेद और जगत् की उत्पत्ति में बीत गए हैं?

उत्तर- यह जो वर्तमान सृष्टि है, इसमें सातवें मन्वन्तर

का वर्तमान है, इससे पूर्व छः मनवन्तर हो चुके हैं। १. स्वायम्भुव २. स्वरोचिष ३. औत्तिमि ४. तामस ५. रैवत ६. चाक्षुष ये छः तो बीत गए हैं और सातवाँ वैवस्वत वर्त्त रहा है। सावर्णि आदि सात मन्वन्तर आगे भोगेंगे। ये सब मिलकर १४ होते हैं और ७१ चतुर्युगियों का नाम मन्वन्तर धरा गया है। उनकी गणना इस प्रकार है कि १७२८००० वर्ष का सतयुग, १२९६००० वर्ष का त्रेतायुग, ८६४००० वर्ष का द्वापर तथा ४३२००० वर्ष का कलियुग। स्पष्ट रूप से इनमें ४:३:२:१ का अनुपात है। फिर एक चतुर्युगी से ४३२०००० वर्ष बन गए। एक मन्वन्तर ७१ चतुर्युगी का होने से ४३२००००×७१=३०६७२०००० वर्ष हुआ। ऐसे छः मन्वन्तर ३०६७२००००×६=१८४०३२०००० वर्ष के हो गया। फिर २७ चतुर्युगियाँ और व्यतीत हो गईं, उनका साल ४३२००००×२७=११६६४०००० वर्ष, फिर अट्ठाइसवीं चतुर्युगी के १७२८०००+१२९६०००+८६४०००+४९७६= ३८९२९७६ वर्ष और हो गए। इस तरह कुल काल १८४०३२००००+११६६४००००+३८९२९७६= १९६०८५२९७६ वर्ष हुए। यह योग स्वामी जी ने विक्रम संवत १९३३ में लिया था। साथ ही यह भी कहा कि वर्तमान में ७६ वाँ समाप्त होकर ७७ वाँ वर्ष चल रहा है।

वर्तमान में २०७३ वर्ष चल रहा है, अर्थात् २०७३- १९३३ =१४० वर्ष आगे चल गए हैं, इसलिए वर्तमान में सृष्टि की आयु होगी १९६०८५२९७७+१४०= १९६०८५३११७ वर्ष।

इस सम्पूर्ण विवरण में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन्धि वर्ष का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है।

स्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है कि १४ मन्वन्तर का काल भोग काल होता है।

'ते चैकस्मिन्ब्राह्म दिने १४ चतुर्दश भुक्त भोगा भवन्ति। एक सहस्त्रं १००० चतुर्युगानि ब्राह्मदिनस्य परिमाणं भवति।।'

अर्थात् १४ मन्वन्तर का काल 'भुक्त भोग' काल है और १०००० चतुर्युगी एक ब्रह्म दिन है। इतना ही समय प्रलय का होता है जो ब्रह्म रात्रि कही जाती है, अर्थात् भोग काल १४×७१=९९४ चतुर्युगी ही है। स्वामी जी ने सृष्टि उत्पत्ति काल की गणना उस समय से की है, जब मनुष्य उत्पन्न हुआ। मनुष्य के उत्पन्न होने के साथ ही चार ऋषियों के द्वारा परमात्मा ने वेद ज्ञान दिया, परन्तु सृष्टि उत्पत्ति प्रारम्भ होने से लेकर मनुष्य की उत्पत्ति होने तक व्यतीत काल को उन्होंने गणना में नहीं लिया। यह समय ६ चतुर्युगी के बराबर माना गया है। यह धारणा आर्यों से अपने भाई पारसियों में गई और पारसियों से इसे यहूदी लोगों ने लिया। उन्होंने सृष्टि उत्पत्ति ६ दिन में मानी और यदि एक दिन का मान एक चतुर्युगी को माने तो उनकी मान्यता भी वेदानुकूल होगी। सृष्टि उत्पत्ति एक क्षण में नहीं हो सकती है, क्योंकि वह वेद की मान्यता के विरोध में है। वेद में स्पष्ट कहा गया है-

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदनेगोभिरद्भिः।
कविबुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवतानां समितिर्बभूव।।

- ऋ. १.९५-८

भावार्थ-मनुष्यों को जानना चाहिए कि काल के लगे बिना कार्य स्वरूप उत्पन्न होकर नष्ट हो जाए-यह होता ही नहीं है।

(स्वामी दयानन्द सरस्वती का भाष्य)

फिर ऋग्वेद में यह भी कहा गया है कि सृष्टि उत्पन्न करने के लिए परमात्मा को गतिहीन परमाणुओं को गति देने के लिए लोहार की तरह आग में धोंकना पड़ा है-

ब्रह्मणस्पति रेता सं कर्मारइवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत।। - ऋ. १०.७२.२

प्रलय में सृष्टि असत् (अव्यक्त) रूप में थी, उसे सत् में लाने के लिए पूर्व युग में परमात्मा को लुहार की भाँति धोंकना पड़ा है।

अब आचार्य जी द्वारा लगाए गए आक्षेपों के उत्तर इस प्रकार हैं। आप लिखते हैं- 'विश्वास नहीं होता कि उनके जैसा विद्वान् व्यक्ति भी तर्कों के ऐसे तुक्के लगा सकता है, जिससे स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे युग पुरुष द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की अवहेलना हो रही हो।' उत्तर में मेरा कहना है कि मैं कोई विद्वान् नहीं हूँ, मैं तो स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों और वेद भाष्यों का अध्येता हूँ। मेरा कोई मौलिक चिन्तन नहीं है। इसमें मेरा क्या दोष है कि मैं स्वामी दयानन्द द्वारा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में वेदोत्तपत्ति काल को जैसा उन्होंने लिखा, वैसा ही प्रस्तुत कर देता हूँ। स्वामी दयानन्द के अनुसार यदि वेदोत्पत्ति काल आज १९६०८५३११७ वर्ष है तो मैं उसे सत्य मानता हूँ। स्वामी ब्रह्मानन्द जी और आचार्य दार्शनेय लोकेश उसे न मानकर १९७२९४९११७ माने तो वे मौलिक चिन्तक हैं?

आप यदि कहते हैं कि मैं जो कह रहा हूँ और मोहनकृति आर्ष पत्रकम् में लिख रहा हूँ वही सही है तो आप मानते रहें। सिद्धान्त एक में आप लिखते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के श्री मुख से सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है। प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदैव बने रहते हैं।

यहाँ सृष्टि के आदि का अर्थ क्या जब ईश्वर परमाणुओं को स्थूल रूप देने लगता है, तब से है अथवा मनुष्य के उत्पन्न होने से है। वास्तव में वेद का ज्ञान तो परमात्मा ने मनुष्य को दिया है और दिया तभी होगा, जब मनुष्य को उत्पन्न कर दिया, परन्तु मनुष्य को उत्पन्न करने से पूर्व उसने वायु, तेज, जल, पृथ्वी और वनस्पति को तो पैदा किया ही है, अत: हमें मनुष्य की उत्पत्ति से पूर्व काल का भी ध्यान रखना है।

सिद्धान्त २- पूर्व में लिख दिया गया है कि सृष्टि की कुल आयु १००० चतुर्युगी होती है और इसी को ब्रह्म का एक दिन कहते हैं, परन्तु भोग काल १४ मन्वन्तर अर्थात् ९४ चतुर्युगी ही होता है।

सिद्धान्त ३- ज्योतिष छ: वेदांगों में से एक है और इसे वेद की आँख कहा जाता है। इसका हम विरोध नहीं करते हैं।

सिद्धान्त ४- सूर्य सिद्धान्त ज्योतिष के प्रमाण ग्रन्थों में से एक है। आचार्य सुदर्शन देव जी तथा पं. राजवीर शास्त्री ऋग्वेद भाष्य भास्कर में लिखते हैं, मयासुर का सूर्य सिद्धान्त सन्धिकाल की मान्यता का आधार है। यह ग्रन्थ अनार्ष पौराणिक मान्यताओं से ओतप्रोत होने से महर्षि को मान्य नहीं है। मयासुर के सूर्य सिद्धान्त का खण्डन दयानन्द सन्देश के विशेषांक में हुआ है, जिसका उत्तर विपक्षी नहीं दे सके हैं। सूर्य सिद्धान्त के १.२४ श्लोक की संगति भी वे नहीं लगा सके हैं। इसकी मान्यता में किसी भी शास्त्र का प्रमाण नहीं मिलता है।

सिद्धान्त ५- यदि कोई व्यक्ति १००० चतुर्युगी को तो मानता है, परन्तु १५ सन्धियों को नहीं मानता तो यह व्यवहार अर्ध जरतीय न्याय के अन्तर्गत स्वीकार्य नहीं है। आपका यह कथन व्यर्थ है, अगर शास्त्र की यह मान्यता होती तो प्रत्येक मन्वन्तर का काल वह ३०६७२०००० + १७२८००० वर्ष = ३०८४४८००० वर्ष लिखता, जैसा कि कलयुग की आयु १२०० देव वर्ष लिखते हैं, जबकि इसमें १०० देव वर्ष सन्धिकाल तथा १०० वर्ष सन्ध्यांश काल जुड़ा हुआ है। यही स्थिति शेष तीन युगों की भी है, परन्तु ऐसा लिखा जाना इसलिए संभव नहीं बन पाया कि इससे तो केवल १४ संधि काल ही काम में आते, शेष उस काल का समायोजन अन्तिम मन्वन्तर के अन्त में किया गया है। यह सब भ्रम मूलक है। मुख्य सिद्धान्त यह है कि सृष्टि का भोग काल १४ मन्वन्तर है तथा सृष्टि की सम्पूर्ण आयु १००० चतुर्युगी है।

सिद्धान्त ६- सिद्धान्त को स्पष्ट नहीं लिख सके हैं। लिखना चाहिए था कि किसी भी वस्तु के भुक्त काल और शेष भोग्य काल का योग वस्तु की सम्पूर्ण आयु के बराबर होता है। यदि ऐसा न हो तो गणितीय त्रुटि अवश्य है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसी आधार पर लिखा है कि सृष्टि की उत्पत्ति हुए १९६०८५२९७६ वर्ष हुए हैं और २३३३२२७०२४ वर्ष सृष्टि के भोग करने शेष हैं। इन दोनों का योग ४२९४०८०००० वर्ष होता है, जो १४ मन्वन्तर के काल के बराबर है। सृष्टि की सम्पूर्ण आयु ज्ञात करने के लिए इसमें सृष्टि निर्माण में जो समय लगा, उसका योग करना होगा। तब सृष्टि की आयु ४३२०००००० वर्ष हो जाएगी। इसे इस तरह समझने का प्रयत्न करें कि हम मनुष्य की आयु की गणना सदैव उसके माता के गर्भ से बाहर आने के बाद करते हैं, परन्तु वास्तव में उसके बनने की क्रिया तो दस माह पूर्व गर्भाधान के अवसर पर ही बन गई थी। माँ के गर्भ में भी उसका जीवन चल रहा था, उसके निर्माण कार्य को हम उसकी आयु में नहीं जोड़ रहे हैं, इसी प्रकार सृष्टि की रचना तो सृष्टि के व्यक्त रूप में आने से पूर्व ही चल रही थी। उस पर आपका ध्यान नहीं है। सृष्टि पूर्ण होने के बाद १४ मन्वन्तर और भोगती है।

जब एक युग या एक मन्वन्तर की चर्चा करेंगे तो भोगा गया काल तथा भोगा जाने वाला काल मिलकर पूर्ण युग अथवा पूर्ण मन्वन्तर की गणना के अनुरूप होंगे ही, इसका कोई विरोध नहीं करता है। फिर आप महर्षि की बात करते हैं कि जो वर्तमान ब्रह्मदिन है, इसके १९६०८५२९७६ वर्ष इस सृष्टि की तथा वेदों की उत्पत्ति में व्यतीत हुए हैं और २३३३२२७०२४ वर्ष इस सृष्टि के भोग करने के बाकी रहे हैं। अनुशीलन में आप लिखते हैं कि यहाँ १९६०८५२९७६ वर्ष भुक्त काल और भोग्य काल

२३३३२२७०२४ वर्षों का योग वर्तमान ब्रह्मदिन की कुल अवधि ४३२०००००० आ जाना सिद्धान्त: आवश्यक है। श्रीमान, आपका यह सोचना असत्य है। भोग काल और शेष भोग्य काल का योग सृष्टि के कुल भोग काल के तुल्य आना चाहिये। यहाँ योग ४२९४०८०००० वर्ष आ रहा है, जो १४ मन्वन्तर के काल के बराबर है। यह सृष्टि की पूर्ण आयु नहीं है। पूर्ण आयु जानने के लिए इसमें सृष्टि उत्पत्ति का काल जोड़ना होगा। सृष्टि का भोग काल तो ४२९४०८०००० वर्ष ही है। जैसे हम मनुष्य की आयु में उसके गर्भकाल के समय को नहीं जोड़ते हैं, वैसे ही भोगकाल (सृष्टि का) में उत्पत्तिकाल को जोड़ना आवश्यक नहीं है। छ: चतुर्युगी का काल सृष्टि उत्पत्ति का समय है। फिर आप खुलकर सामने आ गए हैं कि भोग काल +शेष भोग्य काल का योग इतना (४३२०००००००) वर्ष नहीं आता है। स्वाभाविक है कि यह एक लेखन त्रुटि है, अर्थात् स्वामी दयानन्द ने गलती की है। मेरा कहना है कि स्वामी दयानन्द ने कहीं गलती नहीं की है। १४ मन्वन्तर सृष्टि का भोग काल है और भोग काल तभी प्रारम्भ होता है, जब सृष्टि पूर्ण विकसित होकर इस योग्य हो जाय कि उसमें प्राणी सफलता से अपना जीवन यापन कर सकें। इस सृष्टि निर्माण काल को सृष्टि के भोग काल में जोड़ने से सृष्टि की कुल आयु ४३२०००००००० वर्ष आ जाएगी।

आप अपनी गलत धारणा को सत्य सिद्ध करने के लिए स्वामी जी की उक्ति दे रहे हैं। मेरे मंतव्य कोई अद्वितीय व असाधारण नहीं है और न मैं सर्वज्ञ हूँ। यदि युक्तिपूर्वक विचार-विमर्श के अनन्तर भविष्य में आपके सामने आए तो उसे ठीक कर लीजिएगा। **यह उक्ति आपका साथ नहीं देती है। इसके द्वारा आप छल करके पाठक को ठगना चाहते हैं।** महर्षि की विनम्रता की आड़ में अपना पाण्डित्य बघारना आपको शोभा नहीं देता। कहाँ ऋषि का वैदुष्य और कहाँ आपके चिन्तन का उथलापन।

१४ मन्वन्तर के बाद बची ६ चतुर्युगियों को न तो हम काल की अवधि के रूप में जोड़ना चाहते हैं और न उसके दो भाग करके आगे और पीछे जोड़ने के तरीके ढूँढकर भरपाई कर रहे हैं। मेरे लेख में ऐसा कुछ नहीं किया गया है। आप ऋषि की त्रुटि भी निकाल रहे हैं और उनके समर्थक भी बन रहे हैं। जब ऋषि के लेख में त्रुटि है ही नहीं तो फिर त्रुटि सुधारने की बात व्यर्थ है।

मेरे इस लेख का मानना है कि सृष्टि में मानव की उत्पत्ति कब हुई, क्योंकि मानव के उत्पन्न होने पर ही तो वेद का ज्ञान उसे मिला। वास्तव में मनुष्य ने तो उत्पन्न होने के बाद ही समय की गणना प्रारम्भ की हैं। विरोध करते हुए आप लिखते हैं? कदापि नहीं। मानवोत्पत्ति और वेदोत्पत्ति का ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं है। जब मनुष्य समाप्त हो जाएँगे तो क्या वेद भी समाप्त हो जाएगा। मेरा कहना है कि श्रीमान्, वेद तो ईश्वर का स्वाभाविक ज्ञान है जो न घटता है और न बढ़ता है। ईश्वर चाहे सृष्टि का निर्माण करे चाहे प्रलय , परन्तु अपने ज्ञान (वेद) का न वह विकास ही कर सकता है और न क्षरण ही कर सकता है। यह ईश्वर का अर्जित ज्ञान नहीं है। रही सृष्टि में वेद ज्ञान की बात तो वह मनुष्य से जुड़ी है। सृष्टि के प्रारम्भ में वह ऋषियों को दी जाती है और जब प्रलय हो जाता है, सृष्टि में कुछ रहता ही नहीं है तो वह ज्ञान ईश्वर के पास सुरक्षित रहता है।

मनुष्य ने वेद ज्ञान प्राप्त कर बड़े-बड़े अविष्कार किये हैं। सूर्य तक की दूरी नापना तो एक सामान्य बात है, आज तो लाखों प्रकाश वर्ष दूरी पर स्थित निहारिका मण्डलों तक की जानकारी वैज्ञानिक के पास है। दूरदर्शक यन्त्र के द्वारा तीन निहारिका मण्डलों को तो मेरे गाँव के सामान्य लोगों ने भी देख लिया है। क्या यह कम आश्चर्य की बात है कि आज आप कहीं भी घूमते हुए अपने मोबाइल से विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले व्यक्ति से बात कर सकते हैं? इसके लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। वैदिक ऋषियों ने तो यहाँ तक जान लिया था कि सृष्टि में कुछ ऐसी निहारिका मंडल हैं, वे जब से बनी है उनका प्रकाश पृथ्वी की ओर आ रहा है, परन्तु अब तक पृथ्वी पर नहीं पहुँच पाया है। वास्तव में सृष्टि की कोई सीमा नहीं है। अन्त में मैं कहना चाहता हूँ कि आप सृष्टि के भोग काल और सृष्टि की सम्पूर्ण आयु को एक मानना छोड़ दें। विज्ञान भी इसी धारणा का समर्थन करता है। इतिशम्।

- कोटा, राजस्थान

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३३ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- १६ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ६ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेद वागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ४, ५, ६ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ४ नवम्बर को परीक्षा एवं ५ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१६ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३३ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री

प्राणोपासना - ३

- तपेन्द्र विद्यालङ्कार आइ.ए.एस. (सेवा-निवृत्त)

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना विषय में मुण्डकोपनिषद् के **तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये... यत्रामृता स पुरुषो ह्यात्मो।।** (मुण्डक.१.२.११) तथा **युञ्जन्ति ब्रहनमरुषं....रोचन्ते रोचना दिवि।।** (ऋग्वेद १.१.११९) एवं **सीरा युञ्जन्ति कवयो...धीरा देवेषु सुम्नया।।** (यजुर्वेद १२.६७) का अर्थ एवं व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द जी महाराज ने प्रतिपादित किया है कि प्राण द्वार से प्राण नाड़ियों में ध्यान करके, प्राण को परमात्मा में युक्त करके परमानन्द-मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है।

उपासना विषय में ही महर्षि ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदयदेश है, उसके बीच में अवकाश रूप स्थान में खोज करने से परमेश्वर मिल जाता है। महर्षि ने यह भी स्पष्ट लिखा है कि दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं है।

उद्धरणों में आये शब्द-प्राण, प्राण-नाडियाँ तथा हृदय के सम्बन्ध में विचार किया गया था कि प्राण शुद्ध ऊर्जा है, बाह्य प्राण सूर्य रश्मियों से प्राप्त होता है जिसे आधिभौतिक प्राण कहते हैं। दूसरा आध्यात्मिक प्राण जठराग्नि द्वारा जल से उत्पन्न होता है तथा हृदय में बाह्य प्राण से मिल जाता है। हृदय में एक सौ एक प्राण नाडियाँ हैं इनमें से एक नाडी कपाल शीर्ष तक गयी है जिसे संचरणी कहतेहैं। शेष सौ हिसा नाड़ियाँ हैं, इन प्रत्येक से सौ-सौ उप नाडियाँ निकलती हैं तथा उन प्रत्येक से बहत्तर-बहत्तर हजार उप-उप-प्राणनाड़ियाँ निकलती हैं, जिन्हें पुरीतत भी कहा जाता है।

देह में जीवात्मा का मुख्यालय हृदय है। यह रक्तप्रैषित करने वाला शरीरांग नहीं है, यह स्थूल इन्द्रिय नहीं है। यह प्राण नाड़ियों से बना है। प्राणों में आत्मा प्रतिष्ठित है तथा परमात्मा हृदयाकाश में रहने वाले जीवात्मा के मध्य रहता है। प्राणों में उपासना करके आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है। प्राण बन्धनं हि सौम्य मनइति से यह भी स्पष्ट है कि मन प्राण रूप बन्धन वाला है।

पूर्व में इंगित किया गया था कि जब प्राणी श्वास लेता है तो शरीर की प्राणनाड़ियों में प्राण की गति नीचे की ओर होती है-यह अपानन क्रिया है। जब प्राणी प्रश्वास लेता है तो शरीर की प्राण नाड़ियों में प्राण की उर्ध्व गति होती है-यह प्राणन क्रिया है। प्राण तत्व एक ही है जो शरीर में अपने को पाँच भागों -प्राण अपान, व्यान, समान, उदान- में विभक्त कर पाँच प्रकार के कार्यों को सम्पादित करता है। परमात्मा प्राण में रहता हुआ भी प्राण से अलग है तथा प्राण का नियमन करता है। उदान प्राण के सम्बन्ध में विवेचन अभीष्ट है।

शतं चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासां मूर्धानमभिनिसृतैका।
तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विश्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति।।

- कठोपनिषद् ६-१६

उक्त की व्याख्या करते हुए डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (एकादशोपनिषद्) लिखते हैं कि हृदय की एक सौ एक नाड़ियाँ हैं, उन में से एक मूर्धा-सिर की ओर निकल गई है। मृत्यु के समय उस नाडी से जो ऊपर को उत्क्रमण करता है वह अमृतत्व को प्राप्त करता है, बाकी अन्य नाडियाँ साधारण व्यक्तियों के उत्क्रमण के समय काम आती हैं। ब्रह्मनिष्ठ व्यक्ति के प्राण मूर्धा से निकलते हैं, दूसरों के अन्य मार्गों से।

शाङ्कर भाष्य के अनुसार पुरुष के हृदय से सौ अन्य और सुषुम्ना नाम की एक-इस प्रकार (एक सौ एक) नाडियाँ-शिराएँ निकलती हैं उनमें सुषुम्ना नाम्नी नाड़ी मस्तक का भेदन करके बाहर निकल गयी है। अन्तकाल में उसके द्वारा आत्मा को अपने हृदयदेश में वशीभूत करके समाहित करे। उस नाडी के द्वारा उर्ध्व-ऊपर की ओर जाने वाला जीव सूर्यमार्ग से अमृतत्व-आपेक्षिक अमरणधर्मत्व को प्राप्त हो जाता है।

'उपनिषद् रहस्य' में महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज व्याख्या करते हुए लिखते हैं-हृदय से निकलकर जो १०१ नाड़ियाँ समस्त शरीर में फैलती हैं उनमें से एक

सुषुम्णा नाम वाली नाड़ी जो शरीर में इडा और पिंगला के मध्य रहती है-मूर्धामें जा निकलती है। मुक्त जीव का आत्मा इसी नाड़ी के द्वारा शरीर से निकल कर देवयान (मोक्षमार्ग) का पथिक बन जाता है।

'उपनिषद्समुच्चय' में पण्डित भीमसेन जी शर्मा उक्त का भाष्य करते हुए लिखते हैं-अपने मरण का समय योगी पूर्व से ही जान लेता है। शरीर से निकलने का समय आने से पूर्व ही योगी अपने आत्मा को वश में करके सुषुम्ना नाड़ी के साथ युक्त करे। उस नाड़ी द्वारा शरीर से निकला हुआ जीवात्मा मुक्ति को प्राप्त होता है। जीव नाड़ियों के द्वारा ही निकलते हैं।

अकृत योगाभ्यासः पुरुषः प्रयाणकाले यथेष्टं निस्सर्त्तुं नार्हति।
अतः प्रमाणकालात्पूर्वमेव योगाभ्यासः कार्यः।
अथैकयोर्ध्वं उदानः पुण्येन पुण्यलोकं नयति।
पापेन पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम्।।

- प्रश्नोपनिषद् ३-७

का अर्थ करते हुए डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं कि हृदय की एक नाड़ी उर्ध्वदेश को, मस्तिष्क को जाती है उसमें-उद्+आन-ऊपर या नीचे की तरफ जीवन रहता है। पुण्य कर्म करने से हृदय में बैठे हुए आत्मा को 'उदान' पुण्यलोक में ले जाता है, पापकर्म करने से आत्मा को उदान 'पापलोक' में ले जाता है, दोनों प्रकार के कर्म करने से आत्मा को 'मनुष्य लोक' में ले जाता है।

शांकर भाष्य अनुसार-उन एक सौ एक नाड़ियों में से जो सुषुम्ना नाम्नी एक उर्ध्वगामिनी नाड़ी है उस एक के द्वारा ही ऊपर की ओर जाने वाला तथा चरण से मस्तक पर्यन्त संचार करने वाला उदान वायु (जीवात्मा को) पुण्य कर्म यानी शास्त्रोक्त कर्म से देवादि-स्थान रूप पुण्यलोक को प्राप्त करा देता है तथा उससे विपरीत पापकर्म द्वारा पापलोक यानी तिर्यग्योनि आदि नरक को ले जाता है और समान रूप से प्रधान हुए पुण्य-पापरूप दोनों प्रकार के कर्मों द्वारा वह उसे मनुष्य लोक को प्राप्त कराता है।

महात्मा नारायण स्वामी जी के अनुसार उन एक सौ एक नाडियों में से एक के द्वारा ऊपर जाने वाले प्राण का नाम उदान है जो मृत्यु के समय शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म शरीर सहित जीव को कर्मानुसार भिन्न-भिन्न स्थानों को पहुँचाया करता है।

पण्डित भीमसेन जी शर्मा के अनुसार-हृदय में एक सौ एक नाड़ियाँ हैं, उनमें से एक नाड़ी सीधी मस्तक मूर्धा को चली गई है, इसी सुषुम्ना नाडी में उदान वायु विचरता है। यह नाड़ी मस्तक से लेकर पग के तलवा तक सीधी विस्तृत है, इसी हृदयस्थ नाड़ी के एक प्रदेश में जीवात्मा रहता है। इस नाड़ी के साथ मन को युक्त करते हुए समाधिनिष्ठ योगीजन आत्मज्ञान को प्राप्त होते हैं। उदान नामक प्राण ही लिंग शरीर के सहित जीवात्मा को शरीर से निकालता है और कर्मों के अनुसार योनि व भोग प्राप्त कराता है।

तेजो ह वा उदानस्तस्मादुपशान्त तेजाः।
पुनर्भवमिन्द्रियैर्मनसि सपद्यमानैः।।

- प्रश्नोपनिषद् ३.९

उक्त की व्याख्या करते हुए डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं.... ऋषि कहते हैं कि उदान द्वारा आत्मा शरीर से निकलता है। जब तक शरीर में तेज रहता है, तब तक आत्मा उदान की सहायता से शरीर में ही रहता है। जब शरीर का तेज शान्त हो जाता है तब इन्द्रियाँ बाहर फिरना छोड़कर मन में जा टिकती हैं और मनुष्य पुनर्जन्म की तैयारी करने लगता है।

आचार्य शंकर के अनुसार-जो (आदित्य संज्ञक) प्रसिद्ध बाह्य सामान्य तेज है वही शरीर में उदान है, तात्पर्य यह है क्योंकि उत्क्रमण करने वाला (उदान वायु) तेजः स्वरूप है- बाह्य तेज से अनुगृहीत होने वाला है इसलिए जिस समय लौकिक पुरुष उपशान्त तेजा होता है अर्थात् जिसका स्वाभाविक तेज शान्त हो गया है ऐसा होता है उस समय उसे क्षीणायु-मरणासन्न समझना चाहिये। वह पुनर्भव यानी देहान्तर को प्राप्त होता है। किस प्रकार प्राप्त होता है (इस पर कहते हैं) मन में लीन-प्रविष्ट होती हुई वागादि इन्द्रियों के सहित (वह देहान्तर को प्राप्त होता है।)

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज लिखते हैं-तेज ही उदान है। इसीलिए कहा जाता है कि जिनका तेज शान्त हो चुका है, ऐसे प्राणी मन में लीन हुई इन्द्रियों के साथ पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं।

पण्डित भीमसेन जी शर्मा के भाषार्थ अनुसार-सामान्य

कर सर्वव्यापी तेज ही उदान प्राण का सहायक है। जिस कारण जीवात्मा को शरीर से निकालना इसलिए इस का नाम उदान है। जिससे स्वाभाविक तेज जिसका शान्त हो गया, वह पुरुष मर जाता है अर्थात् मानस शक्ति में प्रवेश किये नेत्र आदि इन्द्रियों के साथ जन्मान्तर में होने वाले शरीरान्तर को प्राप्त होता है।

यच्चित्तस्तेनेष प्राणमायाति, प्राणस्तेजसा युक्त सहात्मना यथा संकल्पितं लोकं नयति।।

- प्रश्न.३-१०

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के अनुसार मृत्यु के समय जिस प्रकार का चित्त होता है, उसी प्रकार का चित्त प्राण के पास पहुँचता है। प्राण अपने तेज के साथ आत्मा के पास पहुँचता है। प्राण ही तेज चित्त और आत्मा को अपने संकल्पो के अनुसार के लोक में ले जाता है।

शांकर भाष्य के अनुसार-इसका जैसा चित्त होता है उस चित्त संकल्प के सहित ही यह जीव इन्द्रियों के सहित प्राण अर्थात् मुख्य प्राणवृत्ति को प्राप्त होता है।.....वह प्राण ही तेज अर्थात् उदानवृत्ति से सम्पन्न हो आत्मा-भोक्ता स्वामी के साथ (सम्मिलित होता है) तथा उदान वृत्ति से संयुक्त हुआ वह प्राण ही उस भोक्ता जीव को उसके पाप-पुण्यमय कर्मों के अनुसार यथासंकल्पित अर्थात् उसके अभिप्रायनुसारी लोकों को ले जाता-प्राप्त करा देता है।

महात्मा नारायण स्वामी जी के अनुसार जो चित्त में वासना है, उसी से यह जीव प्राण को प्राप्त होता है। प्राण तेज से मिलकर आत्मा के साथ उसको जैसा या जो संकल्प किये हुए लोक हैं उनको पहुँचाता है।

पण्डित भीमसेन जी शर्मा के अनुसार शरीर की वर्तमान दशा में मनुष्य जैसे शुभ या अशुभ कर्म प्रायः करता है वैसा ही उसके अन्तःकरण में प्रबल संस्कार होता है। ये संस्कार वासना रूप से सञ्चित होते हैं। वही सञ्चित पाप वा पुण्य कहा जाता है, उन्ही वासनाओं के अनुकूल मरते समय उसका चित्त होता है। मरते समय जीवात्मा का इन्द्रियों के साथ पहले सम्बन्ध टूटता और केवल प्राण के आश्रय से जीवात्मा रह जाता है.....पश्चात् उदान से युक्त प्राण लिङ्ग शरीर के सहित जीवात्मा को शरीर से निकालके कर्मानुकूल स्थान योनि और भोग को प्राप्त कराता है।

अथ यदास्य वाङ्मनसि संपद्यते मनः प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां देवतायामथ न जानाति।।

- छांन्दोग्य ६-१५-२

सोम्य पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि संपद्यते मनः प्राणे प्राणस् तेजसि तेजः परस्यां देवतायाम्।।

- छान्दोग्य ६-८-६

जब तक पुरुष की वाणी मन में, मन प्राण में, प्राण तेज में और तेज पर देवता में लीन नहीं होता, तब तक वह जानता है, पहचानता है। इसके बाद जब इसकी वाणी मन में, मन प्राण में, प्राण तेज में और तेज पर देवता में लीन हो जाता है, तब नहीं पहचानता। हे सोम्य! मरने वाले पुरुष की वाणी मन में, मन प्राण में, प्राण तेज में और तेज परम देवता में लीन हो जाते हैं।

स्वामी सत्यबोध सरस्वती जी के अनुसार शरीर जब जरावस्था को प्राप्त होकर जीव के रहने योग्य नहीं रह जाता है तब जीव शरीर में अपने मुख्यालय हृदय में आ जाता है। वहाँ समस्त प्राणोन्द्रियाँ जीव के समीप इकट्ठी हो जाती है और जीव वाग् चक्षु आदि समस्त इन्द्रियों से एक-एक करके अपना व्यापार समेटता जाता है। वे वागादि समस्त इन्द्रियाँ एक-एक करके मन में समाहित होती जाती है। मन मुख्य प्राण में, प्राण तेज में और तेज परमात्मा में समाहित हो जाता है। अन्त में जीव जब हृदय के उर्ध्व भाग से शरीर की प्राणनाडियों द्वारा नवहारों में से किसी एक से उत्क्रमण करने लगता है, तब अन्तर्यामी परमात्मा द्वारा नियंत्रित तेज से युक्त प्राण अर्थात् उदान शरीर के समस्त अंगों से प्राणों का समेट कर जीव के साथ ही निकल जाता है। जीव सूर्य की किरणों के माध्यम से (जो बाह्य प्राण का स्रोत है) सूर्य लोक को पहुँचा दिया जाता है। लेकिन साधारण जीव जो मोक्ष विद्या को नहीं जानते, वे पुनः सूर्य की किरणों के द्वारा ही वापस पृथिवी लोकों को अपने कर्मानुसार योनियों में पहुँचा दिये जाते हैं। उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि हृदय की एक सौ एक नाड़ियों में से जो एक नाडी मूर्धा सिर तक गयी है तथा भेदन करके उसके भी बाहर निकल गयी है, उस प्राण नाड़ी से जो उत्क्रमण करता है वह सूर्य मार्ग से अमृतत्व को प्राप्त करता है। इस प्राण नाड़ी में चरण से मस्तक पर्यन्त ऊपर की ओर जाने

वाला-संचार करने वाला उदान प्राण जीवात्मा को पुण्य: लोक को प्राप्त करा देता है। इसी एक प्राण नाड़ी के द्वारा ऊपर की ओर जाने वाला उदान प्राण सूक्ष्म शरीर सहित जीव को कर्मानुसार भिन्न-भिन्न स्थानों को पहुँचाता है। यह एक नाड़ी जो ऊपर की ओर सीधी मस्तक मूर्धा तक गयी है, जिसमें उदान प्राण विचरण करता है, इसी नाड़ी में जीवात्मा का निवास है तथा इस नाड़ी के साथ यानि उदान प्राण से मन को युक्त करते हुए योगीजन आत्मज्ञान को प्राप्त होते हैं। प्राण ही तेज अर्थात् उदानवृत्ति से सम्पन्न हो-जीव को उसके पाप-पुण्य कर्मों के अनुसार यथा संकल्पित लोकों को प्राप्त कराता है। उत्क्रमण करने वाला उदान प्राण तेज: स्वरूप है। ऊपर जाने वाली इस प्राण नाड़ी द्वारा ऊपर की ओर जाने वाला तथा चरण से मस्तक पर्यन्त संचार करने वाला उदान प्राण है तथा उदानवृत्ति से संयुक्त प्राण अर्थात् उदान प्राण ही मस्तक से पग के तलवे पर्यन्त विचरता है तथा ऊर्ध्वगामिनी इस हृदयस्थ नाड़ी के एक प्रदेश में आत्मा रहता है।

....मनो ह वाव यजमान इष्टफलमेनोदान:
स एनं यजमानमहरह ब्रह्म गमयति।।

- प्रश्न ४.४.

जिस प्रकार यज्ञ में यजमान यज्ञ करता है इसी प्रकार शरीर में मन यजमान है। इष्टफल शरीर में मानो उदान है। यह उदान मन रूपी यजमान को दिन-दिन ब्रह्म की तरफ ले जाता है। (डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार)। शांकर भाष्य के अनुसार मन ही निश्चय यजमान है और इष्टफल ही उदान है, वह उदान इस मनरूप यजमान को नित्यप्रति ब्रह्म के पास पहुँचा देता है। **इष्टफलंयागफलमेवादोनो..... अतो यागफलस्थानीय उदान:।** अर्थात् उदान वायु ही इष्टफल यानि यज्ञ का फल है, क्योंकि इष्ट फल की प्राप्ति उदान वायु के निमित्त से ही होती है। वह उदान वायु इस मन वाले यजमान को स्वप्नप्रवृत्ति से भी गिराकर नित्यप्रति सुषुप्ति काल में स्वर्ग के समान अक्षर ब्रह्म को प्राप्त करा देता है। अत: उदान यागफल स्थानीय है। एक अन्य टीकाकार ने ब्रह्म का अर्थ सुख किया है, जो प्रकरणोचित नहीं होने से ब्रह्म अर्थ ही उपयुक्त है।

स्वामी सत्यबोध सरस्वती जी के अनुसार प्राणायाम विद्या का इष्टफल उदान प्राण की पिण्ड (धड़) में स्थिरता का होना है। यह उदान प्राण ही मन रूपी यजमान को नित्य प्रति ब्रह्म से सम्बन्ध करा देता है। उदान प्राण स्थिर होने पर ही आत्मदर्शन उपलब्ध होते हैं। ब्रह्म विज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म होने से तथा केवल प्राण विद्या द्वारा उपलब्ध होने से परमात्मा के प्रकाशस्वरूप का साक्षात् दर्शन उदान प्राण के द्वारा धर्माचरण तथा अष्टाङ्ग योग के अनुष्ठान पूर्वक पवित्रात्मा ही परमात्मा को प्राप्त करने में समर्थ होता है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय

दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता

उपशीर्षक

१. महर्षि दयानन्द का विशिष्ट दार्शनिक चिन्तन
२. महर्षि दयानन्द का ईश्वरविषयक चिन्तन
३. ईश्वर एवं ब्रह्म, ईश्वर/ब्रह्मस्वरूप, कर्तृत्व
४. महर्षि दयानन्द का जीव विषयक चिन्तन (जीव का स्वरूप, संख्या, परिमाण, सादि-अनादि, जीव-ब्रह्म सम्बन्ध, अंशांशिभाव, जीव-जगत् सम्बन्ध, जीव का कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व, मुक्ति में जीव का स्वरूप, जीव के मौलिक गुण, जीव-आत्मा-जीवात्मा)
५. महर्षि दयानन्द का जगत् विषयक चिन्तन
६. मध्यकालीन आचार्यों (शङ्कर एवं रामानुज) केसाथ दयानन्द के दार्शनिक विचारों की तुलना
७. स्वर्ग/मोक्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. संहिता
२. उपनिषद
३. षड्दर्शन
४. दयानन्द दर्शन - डॉ. वेदप्रकाश गुप्त-मेरठ
५. दयानन्द दर्शन - डॉ. श्री निवासशास्त्री - कुरुक्षेत्र वि.वि.
६. त्रैतवाद का उद्भव और विकास-डॉ. योगेन्द्रपाल शास्त्री
७. आदर्श त्रैतवाद-राजसिंह भल्ला -सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
८. महर्षि दयानन्द विरचित ग्रन्थ
९. जीवात्मा - गंगाप्रसाद उपाध्याय-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
१०. आत्मदर्शन - महात्मा नारायण स्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र.सभा-दिल्ली
११. आस्तिकवाद-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय-घूडमल प्रहल्लादकुमार - हिण्डौन, राजस्थान
१२. मृत्यु और परलोक म. नारायणस्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
१३. अनादि तत्त्व-पं. चमूपति
१४. वैदिक स्वर्ग- पं. चमूपति
१५. महर्षि दयानन्द के दार्शनिक मन्तव्य-डॉ. कर्मसिंह आर्य
१६. ईश्वर प्रत्यक्ष -पं. मदनमोहन विद्यासागर
१७. ईश्वरसिद्धि-डॉ. श्रीराम आर्य
१८. महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार-परोपकारिणी सभा, अजमेर

अदीना स्याम शरदः शतम्

-श्री गजानन्द आर्य, संरक्षक परोपकारिणी सभा

पिछले अंक का शेष भाग....

ईश्वर ने शरीर की रचना की, शरीर के अलग-अलग अंग बनाए, जिनसे मनुष्य अलग-अलग काम लेता है। आँखों से देखता है, कानों से सुनता है, मुँह से भोजन ग्रहण करता है, नाक से श्वास लेता है, पैरों से चलता है, हाथों से काम करता है इत्यादि। सभी अंगों में यथायोग्य शक्ति का संचार किया, लेकिन जो सबसे बड़ी शक्ति ईश्वर ने दी, वह है मनुष्य का मस्तिष्क। यह मस्तिष्क है जो शरीर के सभी अंगों से काम करवाता है। मस्तिष्क के निर्देश पर शरीर किसी भी काम को करने के लिए उद्यत होता है। सारे अंग एक तालमेल के साथ उस काम में लग जाते हैं। ईश्वर ने अपनी इस रचना को जिसे हम मस्तिष्क कहते हैं, उर्वर बनाया है। इसमें अद्भुत शक्तियाँ भर दी हैं। किसी उपजाऊ जमीन की तरह इसके अंदर विचारों की खेती होती है, फसलें लगती हैं, निर्णय लिए जाते हैं तथा उन निर्णयों के आधार पर कार्य संपादन होता है। गीता के तेरहवें अध्याय में मनुष्य को क्षेत्र कहा गया है तथा मस्तिष्क को क्षेत्रज्ञ।

ईश्वर ने हमें चार प्रकार की जीवनी शक्तियाँ दी हैं, जिन्हें हम कहते हैं-मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। चारों शक्तियाँ निराकार हैं। ये सामान्य आँखों से देखी नहीं जा सकतीं, लेकिन ये चारों शक्तियाँ हमारे मस्तिष्क में समाविष्ट हैं। चारों शक्तियाँ ही मस्तिष्क रूपी खेत में बीज डालती हैं। वे ही बीज मस्तिष्क में बढ़ते-बढ़ते विशाल वृक्ष की तरह विशाल योजनाओं का रूप ले लेते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये चारों जीवनी शक्तियाँ, इंसान की मृत्यु के बाद उसके कर्मों के बाकी बचे हुए फलों के रूप में, उसे पुनर्जन्म में उसके अंदर रोपित मिलती हैं, अर्थात् जब एक शिशु जन्म लेता है तो उसके अन्दर इन चारों जीवनी शक्तियों के बीज कम या ज्यादा मात्रा में मौजूद होते हैं। यह मात्रा उसके पूर्वजन्म के शुभ कर्मों के फलस्वरूप निर्धारित होती हैं। यही कारण है कि जब दो जुड़वाँ बच्चे एक साथ पैदा होते हैं, तो भी उनके अंदर की जीवनी शक्तियाँ एक-सी नहीं होतीं। इस कारण उनमें से एक बच्चा अधिक मेधावी, अधिक बुद्धिमान् और अधिक तेजस्वी हो सकता है।

अगर हम पूरे शरीर की तुलना आज के युग में प्रयुक्त कंप्यूटर से करें तो हम कह सकते हैं कि हमारा जो स्थूल शरीर है, वह कंप्यूटर के हार्डवेयर की तरह है, लेकिन मस्तिष्क के अंदर स्थापित शक्तियाँ इसके ऑपरेटिंग सिस्टम की तरह हैं, जो विचार नाम के सॉफ्टवेयर को जन्म देती रहती हैं। वास्तविकता यह है कि कम्प्यूटर की रचना मनुष्य शरीर की सारी शक्तियों का अनुकरण करके ही हुई है। शिवसंकल्पमस्तु के मंत्रों में ऐसी चर्चा है-शरीर एक यज्ञ की तरह है जिसमें ७ प्रकार के होता हैं। होता वह होते हैं जो यज्ञ में आहुति डालते हैं और इसकी अग्नि को प्रज्वलित करते हैं। इसे और अधिक दैदीप्यमान बनाते हैं। दो आँख, दो कान, दो नासिकाएँ तथा एक मुख -यह सातों होता मस्तिष्क को ज्ञान के रूप में आहुति देते हैं।

कानों में ध्वनि के रूप में, आँखों में दृश्य के रूप में, नासिका में प्राण शक्ति तथा गंध के रूप में, मुख में स्वाद और हर खाद्य वस्तु के गुण के रूप में आहुतियाँ ही तो हैं। एक उदाहरण लेते हैं- एक नवजात शिशु जब माँ के गर्भ से बाहर आता है, तब उसकी सबसे पहली पहचान अपनी माँ से ही होती है। वह शिशु माँ के शरीर के अंदर पैदा होकर बड़ा हुआ, वह उस शरीर के स्पर्श को, ऊष्मा को तथा गंध को पहचानता है। जब माँ अपने नवजात शिशु को अपने हाथों में लेकर अपने हृदय से लगाती है तो शिशु अपने-आपको सुरक्षित अनुभव करता है।

शिशु के पैदा होने के बाद सबसे अधिक प्रतीक्षा होती है उसके रोने की। अगर शिशु रोता नहीं है, तो उसे प्रयास करके रुलाया जाता है। जब शिशु रोना शुरू करता है, तब जाकर माँ और अन्य लोगों को यह पूरा विश्वास होता है कि बच्चा ठीक है। लेकिन शिशु की दृष्टि से देखें तो उसका रोना उसको अपने अस्तित्व का ज्ञान होना है। ईश्वर प्रदत्त शक्तियों में अहंकार का अर्थ साधारण भाषा में घमण्ड मान

लिया गया है, लेकिन शास्त्रों में अहंकार का अर्थ है- स्वयं के अस्तित्व को समझना। बच्चे का प्रथम रुदन बच्चे के अंदर उसके अहंकार यानी उसके अस्तित्व के होने का बीजारोपण है।

जब शिशु रोने लगता है, तो माँ विह्वल होकर शिशु को अपने स्तन से लगाती है। ईश्वर की रचना का सौंदर्य है कि शिशु को इस विश्व में लाने के पूर्व, उसके आहार की व्यवस्था दूध के रूप में माँ के स्तनों में संचारित कर देता है। जैसे ही शिशु का मुँह माँ के स्तन को स्पर्श करता है, उसके अन्दर स्थापित बुद्धि उसे उस दूध को पीने और उसे उदर के अँदर पहुँचाने की कला सिखा देती है। यहाँ से शिशु के विकास में उसकी बुद्धि का प्रयोग शुरू हो जाता है।

धीरे-धीरे शिशु यह सीख जाता है कि उसे कुछ चाहिए तो उसे रोना पड़ेगा, उसके रोते ही माँ उसे उठा लेती है और उसे दूध पिलाने लगती है। लेकिन शिशु की आवश्यकताएँ बढ़ने लगती है, फिर जब शिशु स्तन से दूध पीने का विरोध करता है, तो माँ उसकी अन्य आवश्यकताओं का अध्ययन करती है। शायद इसने मल या मूत्र कर दिया हो या कोई मच्छर तो नहीं काट गया या फिर कोई चीज उसकी कोमल त्वचा में चुभ तो नही रही या उसके उदर में कोई समस्या है। धीरे-धीरे माँ और शिशु के बीच एक संवाद स्थापित हो जाता है, जिसमें शब्द नहीं होते। दोनों की ही बुद्धियाँ इस संवाद को स्थापित करने में मदद करती हैं। शिशु जब खुश होकर मुस्कुराता है, माँ का हृदय वात्सल्य से भर जाता है। माँ उसे कलेजे से लगाती है, चूमती है, तब शिशु समझने लगता है, उसकी मुस्कुराहट का माँ पर क्या असर होता है।

ईश्वर ने मातृत्व में अद्भुत शक्तियाँ प्रदान की हैं। कोई स्त्री स्वभाव से कितनी भी डरपोक क्यों न हो, लेकिन बच्चे को जन्म देने की असह्य पीड़ा वह सह जाती है। बच्चे के जन्म के साथ ही उसकी अपनी दिनचर्या बदलकर बच्चे की दिनचर्या से जुड़ जाती है। बच्चा जब सोता है, तब माँ सोने का प्रयास करती है, लेकिन उसे नींद में भी अपने बच्चे का स्पर्श जरूरी होता है। जब बच्चा जाग जाता है तो माँ अपनी नींद की परवाह किए बिना उसके साथ जागती है। बच्चे के हँसने-रोने से माँ की ममता, हर्ष, चिंता, दुविधा आदि भाव जुड़े होते हैं।

माँ ही बच्चे का परिचय उसके पिता से करवाती है। जब माँ गोद में लेकर बच्चे से कहती है- देखो, यह तुम्हारे पिता है, तब हमें लगता है कि यह बच्चा यह सब कहाँ समझेगा। लेकिन बच्चे का नन्हा मस्तिष्क धीरे-धीरे परत-दर-परत यह ज्ञान ग्रहण करता है कि कौन उसके पिता हैं, दादा हैं, दादी हैं, भाई-बहन हैं। उसकी पहचान सबसे बढ़ने लगती है। बच्चे का निर्माण कार्य यूँ तो माता के उदर में ही प्रारम्भ हो जाता है, लेकिन इसके बाद उसका यह निर्माण कार्य पूरी उम्र भर चलता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो माँ उसके एक-एक अंग को परखती है। वह देखती है कि बच्चा सुन पा रहा है या नहीं, बोल पा रहा है या नहीं, उसके हाथ-पैर ठीक तरह से गतिमान हैं या नहीं? माँ धीरे-धीरे बच्चे को बोलना सिखाती है। बच्चा एक-एक शब्द सीखने लगता है। उसे उसका नाम बताती है, बच्चा धीरे-धीरे अपने नाम को समझने लगता है। कोई जब उसके नाम से उसे पुकारता है तो वह उस तरफ देखने लगता है। यह प्रारंभिक ज्ञान जो उसे अपने माँ से मिलता है, यही तो उन जीवनी शक्तियों का उसके मस्तिष्क में बीजारोपण है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, बच्चा अपने पिता से, परिवार के अन्य लोगों से तथा गुरुजनों से बहुत कुछ सीखता है। उसके मस्तिष्क का खजाना दिनों-दिन समृद्ध होता जाता है। मस्तिष्क का विकास ही मनुष्य को उसके वृद्धावस्था तक पहुँचते-पहुँचते पूरी तरह परिपक्व बनाता है।

उसके खजाने में भाषा, व्याकरण, गणित, साहित्य, विज्ञान, इतिहास, लोकाचार, मर्यादाएँ, व्यवहार आदि सब कुछ प्रचुर मात्रा में भरा होता है। हर प्रकार के ज्ञान का वह समयानुसार लाभ लेता है। लौकिक ज्ञान ही मात्र कारण नहीं होता मस्तिष्क के विकास का। हर बच्चा जब जन्म लेता है तो वह अपने साथ अपने पूर्वजन्म के कुछ अनुभव, बचे हुए कर्मों का हिसाब-किताब और कुछ स्मृतियाँ लेकर आता है। ईश्वर पूर्व जन्म के कर्मों के फल को बच्चे की जीवनी शक्ति से जोड़ देता है। हर जीवात्मा का शुभ-अशुभ कर्म उसे उसका फल जरूर दिलवाता है। जो कर्म

एक जीवनकाल में फल से बच जाते हैं, वे सारे कर्म जीवात्मा के साथ उसके पुनर्जन्म में साथ जाते हैं। कोई बच्चा विकलांग क्यों पैदा होता है, कोई मंद बुद्धि या कोई कुशाग्र बुद्धि क्यों होता है, क्यों कोई गरीब के घर में जन्म लेता है और क्यों कोई अमीर के? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है- पूर्वजन्म के बचे हुए कर्म फल उसके नए जन्म में भाग्य के नाम से जाने जाते हैं।

बच्चे की जीवनी शक्ति में बुद्धि का विकास हमने समझा। दूसरा महत्त्वपूर्ण भाग है अहंकार। जैसा कि पहले लिखा है, अहंकार का अर्थ है स्व-अस्तित्व। साधारण भाषा में कहें तो मेरेपन की भावना। मनुष्य के विकास के साथ उसका मेरापन बढ़ता है, वह स्वयं से आगे बढ़कर परिवार को मेरा परिवार मानने लगता है, अगले वृत्त में पहुँचकर वह मेरे मित्र, मेरा गाँव, मेरे देश की तरफ बढ़ने लगता है, उसके अस्तित्त्व के दायरे का विकास होता है और वह मैं की संकुचित सीमा से निकल कर आगे बढ़ता रहता है। उसकी बुद्धि, उसकी परिस्थितियों के आधार पर उसका दायरा बढ़ता है। कई बार यह दायरा संकीर्ण हो जाता है। कुछ लोग अपनी जाति को ही अपना सर्वोच्च दायरा मान लेते हैं, कोई अपनी भाषा बोलने वालों तक अपना दायरा बना लेता है। इसी प्रकार धर्म, मान्यता, ऐतिहासिक मूल, आदि कई कारण बनते हैं इस अहंकार की सीमा के। जो जीवन में सर्वोच्च उँचाइयों तक पहुँच जाता है, वह मनुष्य मात्र और प्राणी मात्र को अपने अहंकार की सीमा मानने लगता है। इतिहास में सब तरह के उदाहरण हम पाते हैं। मुगल शासकों के इतिहास में देखते हैं तो हम पाते हैं कि उसमें ऐसे-ऐसे स्वार्थी हुए हैं, जिन्होंने अपने खुद के हित के लिए अपने पिता को तथा अपने भाइयों को मार दिया और बादशाह बने।

आज के युग में हम देखते हैं कि परिवार में जो भाई ज्यादा धन अर्जन करने लगता है, वह समझने लगता है कि मेरा कमाया हुआ धन बस मेरा है। दूसरे भाइयों की मेरी क्या जिम्मेवारी? पिता अपनी संपत्ति का बँटवारा अपने पुत्रों में तो कर देता है, लेकिन अपने गरीब सगे भाइयों को कुछ नहीं देता। दूसरी तरफ से सीमा पर लड़ रहे सैनिक की उदारता देखिए कि वह अपने देश को अपना अस्तित्व मानते हुए दुश्मनों से लड़ता है और अपने प्राणों की बाजी लगा देता है। मेरेपन की परिभाषा प्रत्येक व्यक्ति की अलग होती है, उसकी परिधि के अनुसार संसार में उसकी ख्याति होती है। हमारी जीवनी शक्तियों का एक हिस्सा है-मन। मन हमारे मस्तिष्क का वह विभाग है जो मानवीय भावनाओं का केन्द्र होता है। हमारी भावनाएँ हमारे संस्कारों, हमारी शिक्षा तथा कुछ हद तक हमारे परिवेश का परिणाम होती हैं। मन की पवित्रता व्यक्ति को सज्जन पुरुष बना देती है, मन की कुटिलता उसको अपराधी बना देती है। कई बार मन अपनी सीमाएँ लाँघने की कोशिश करता है। उस समय उसकी बुद्धि उसे रोकती है। मन की कुटिलता मनुष्य से चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या जैसे घृणित काम करवाती है। इन कामों को करने के पीछे उसे तात्कालिक लाभ तो नजर आता है, लेकिन दंड नहीं। उस व्यक्ति की बुद्धि इतनी कमजोर होती है कि उसे लाभ तो आकर्षित करते हैं, लेकिन दंड गौण हो जाता है।

मधुमेह के मरीज को मिठाई वर्जित होती है, लेकिन उसका मन जब विद्रोह करने लगता है तो वह उस सीमा को लाँघ कर मिठाई खा लेता है। क्षणिक स्वाद उसे सुख पहुँचाता है, लेकिन उसकी बढ़ी हुई अस्वस्थता उसे बहुत कष्ट देती हैं, इसलिए शास्त्रों में शिवसंकल्पमस्तु के मंत्रों में मन को उत्तम बनाने की प्रार्थना की गई है। मन पर नियंत्रण पाने की कामना की गई है। मन और बुद्धि का गहरा संबंध है। मन की इच्छाएँ बुद्धि के आधार पर निर्भर हैं। एक छोटा-सा बच्चा चाँद को देखकर उसे पाने के लिए लालयित हो सकता है। उसका दोष नहीं, क्योंकि उसकी बुद्धि इतनी तीव्र नहीं होती। वह नहीं समझ सकता कि यह बात असंभव है। उसी तरह एक छोटा बच्चा अगर किसी खतरनाक जीव या वस्तु को देखता है तो उससे डरता नहीं, उसकी तरफ चल पड़ता है।

युवावस्था में मन की भावनाएँ शरीर में होने वाले परिवर्तनों के कारण गलत दिशा में भटकने की तरफ आकर्षित होती हैं। मित्रों की देखा-देखी कई बच्चे धूम्रपान, शराब या अन्य बुरी वस्तुओं की तरफ प्रेरित होते हैं। ऐसे में उनकी बुद्धि अगर सुसंस्कारों से युक्त होगी तो उन्हें गलत रास्ते पर जाने से रोक लेगी। इसलिए जहाँ

शिवसंकल्पमस्तु के मंत्रों में अच्छे मन की प्रार्थना की गई है, उसी प्रकार गायत्री महामंत्र में अच्छी बुद्धि की प्रार्थना की गई है। अच्छी बुद्धि और अच्छा मन मिलकर ही एक अच्छा व्यक्तित्व बनता है।

जीवनी शक्तियों का चौथा विभाग है चित्त। चित्त का सीधा अर्थ जुड़ता है चेतना से। हमारी चेतना का स्तर हमारे चित्त को निर्धारित करता है। व्यक्ति में अलग-अलग प्रकार के गुण-अवगुण पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए आलस्य, प्रमाद, चंचलता, गंभीरता, चुस्ती, फुर्ती, अंतमुर्खीवृत्ति या बाह्यमुखीवृत्ति इत्यादि। ये बातें कहीं न कहीं चेतनता से जुड़ी हैं। चित्त की वृत्ति भी मनुष्य अपने प्रयासों से ठीक करता है। इस वृत्ति को ठीक करने में उसकी बाकी तीनों शक्तियाँ काम करती हैं। एक संपूर्ण व्यक्तित्व चारों जीवनी शक्तियों के समावेश से बनता है।

जब हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं- अदीना: स्याम शरद: शतम् तो उसमें यही प्रार्थना करते हैं-ईश्वर, हमें १०० वर्ष की आयु दीजिए लेकिन हमारी जीवनी शक्तियों के साथ। अगर हमारी ये शक्तियाँ चली गईं तो हमारा जीवन बेकार है। वृद्धावस्था में हमारी शारीरिक शक्तियाँ तो कम होंगी ही, लेकिन हमारी बौद्धिक, आत्मिक तथा वैचारिक शक्तियाँ क्षीण नहीं होनी चाहिए। हमारी जीवनी शक्तियाँ हमारे वृद्धावस्था का खजाना है। जीवनभर के अनुभव, स्वाध्याय, आचरण और आध्यात्मिकता के बल पर हमारी वृद्धावस्था में हमारी जीवनी शक्तियाँ चरमोत्कर्ष पर होती हैं। हम शारीरिक रूप से अशक्त हो चलते हैं, लेकिन बौद्धिक रूप से नहीं।

हमें सौ वर्ष की उम्र तक हमारी जीवनी शक्तियों का पूरा सामर्थ्य मिले, ईश्वर से यही प्रार्थना है।

- द्वारा श्री महेन्द्र आर्य, मुम्बई

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

सर्वविध सम्मानों से ऊपर महर्षि दयानन्द सरस्वती

- इन्द्रजित् देव

प्रतिवर्ष भारत सरकार कुछ विशिष्ट नागरिकों को उनकी प्रतिभाओं व राष्ट्र को उनकी देन के आधार पर नागरिक सम्मान देती आ रही है। ये सम्मान (उपाधियाँ) चार प्रकार के हैं- पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्म विभूषण व भारत रत्न। इस वर्ष भी ये नाम सम्मान कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को प्रदान करने की घोषणा की गई है, इनमें से एक स्वामी दयानन्द सरस्वती भी है, जो पद्म भूषण के सम्मान के अधिकारी समझे गए हैं।

मैं २६ जनवरी को यह समाचार पाकर आश्चर्य में पड़ गया। आर्य समाज के संस्थापक व आधुनिक युग के महान् वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती की याद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा पोषित भाजपा सरकार को कैसे आई? चाहे सरकार तो स्वामी विवेकानन्द से बड़ा किसी सार्वजनिक व्यक्ति को मानती ही नहीं। अस्तु। मैंने श्री प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी व अन्य कुछ विद्वानों से पूछताछ की तथा अपने स्तर पर भी खोज की तो पता चला कि उपरोक्त नागरिक सम्मान आर्यसमाज के संस्थापक व वेदोद्धारक जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती को नहीं दिया गया, अपितु स्वामी दयानन्द सरस्वती को दिया है, जो प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के गुरु हैं तथा उत्तराखण्ड से सम्बद्ध रहे हैं। सम्भवत: स्वर्गीय हो चुके हैं।

यह जानकारी पाकर मुझे प्रसन्नता हुई है कि दो व्यक्ति एक ही नाम के हैं तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती को उपरोक्त नागरिक सम्मान देने की धृष्टता सरकार ने नहीं की। धृष्टता शब्द पाठकों को अटपटा प्रतीत होगा। मेरा निवेदन है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती पद्म भूषण तो क्या भारतरत्न की उपाधि से भी कहीं उच्च सम्मान से भी ऊँचे हैं। यदि कभी सरकार ने उन्हें भारत रत्न सम्मान प्रदान करने की घोषणा कर दी तो आर्य समाज को इसे अस्वीकार कर देना चाहिए। महर्षि दयानन्द के कार्य, सिद्धान्त व विचार वेदाधारित हैं, जो सार्वदेशिक, सार्वकालिक, सार्वभौमिक तथा सर्वजनहिताय हैं। उपरोक्त चारों नागरिक सम्मान आजतक जिनको दिए गए हैं, अपवाद छोड़कर अधिकतर सत्तासीन दलों व व्यक्तियों के हितों व निजी पसन्द के ही व्यक्ति थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती आप्त पुरुष थे, ऋषियों में महर्षि थे। जैसे चमकने वालों में सूर्य, शीतल पदार्थों में चन्द्रमा, हाथियों में ऐरावत, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में कृष्ण, योगियों में पतंजलि, वीरों में जामदग्न्य को माना जाता है, वैसे दयानन्द निराले थे। दयानन्दो दयानन्द इव अर्थात् दयानन्द दयानंद जैसे ही थे अनुपमेय। अनुपमेय दयानंद को बस भारत के किसी सम्मान से न बांधना चाहिए।

- चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर, हरियाणा-१३५००१

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ जुलाई २०१६ तक)

१. श्री हरनारायण चण्डक, मुम्बई, महाराष्ट्र २. श्री मगन सिंह त्यागी, गाजियाबाद, उ.प्र. ३. स्वास्तिकामा चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र ४. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली ५. श्रीमती संध्यापाल, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ६. श्री सुरेश कुमार सैनी, विदिशा, म.प्र. ७.डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ८. श्री वेदास्वामी दयानन्दगिरि, भिवानी, हरियाणा ९. श्री अरविन्द हेड़ा, अजमेर १०. श्रीमती प्रतिभा एन. राजगुरु, अजमेर ११. मै. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नईदिल्ली १२. सीमा गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ जुलाई २०१६ तक)

१. कैप्टन चन्द्रप्रकाश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़ २. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला कैन्ट, हरियाणा ३. श्री ओमप्रकाश सोमानी, अजमेर ४. डॉ. बद्रीप्रसाद पँचोली, अजमेर ५. श्री ओमप्रकाश सोमानी, अजमेर ६. श्रीमती तरुणा गहलोत, अजमेर ७. सच्चिदानन्द आश्रम, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड़ ८. श्री उमेशचन्द त्यागी, अजमेर ९. श्री सी.एल. भण्डारी, मुम्बई, महाराष्ट्र।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

वैशेषिक दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि कणाद**' द्वारा प्रणीत '**वैशेषिक दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा सितम्बर-२०१६ के प्रथम सप्ताह से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ५-६ महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

जिज्ञासा समाधान - ११७

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा - मेरी शंकाएँ-

१. महर्षि दयानन्द जी के समय माईक का सिस्टम नहीं था, तो महर्षि जी हजारों लोगों के बीच में अपनी वाणी को कैसे प्रस्तुत करते थे?

२. महर्षि जीकी फोटोज् सही हैं, किन-किन ने खेंची औरा कब-कब?

३. महर्षि दयानन्द जी उनके पूर्व ऋषियों से भिन्न थे क्या देश काल परिस्थिति के अनुसार?

४. महर्षि दयानन्द जी उनके पूर्व के ऋषियों से भी अधिक महान् थे क्या? कपिल, जैमिनि, गौतम आदि ऋषियों ने दर्शन प्रस्तुत किये हैं। ऋषि दयानन्द जी ने तो ऋग्वेद के छः मण्डल पूर्ण और सातवें मण्डल के कुछ मन्त्र तक और यजुर्वेद का पूर्ण भाष्य किया है तो हम ऋषियों से भी अधिक ज्ञान में सामर्थ्य में महर्षि दयानन्द जी को महान् मान सकते हैं क्या?

- रणवीर आर्य, हैदराबाद, तेलंगाना

समाधानः- महर्षि दयानन्द जी का व्यक्तित्व अद्भूत था, यह जानकारी उनके दर्शन करने वालों ने दी है। महर्षि के जीवंत व्यक्तित्व का वर्णन बनेड़ा निवासी श्री नगजीराम जी शर्मा एक सनातनी विद्वान् ने किया है, इन्होंने महर्षि के दर्शन किये थे। उनके उपदेश व्याख्यान सुने थे, महर्षि को निकट से देखा था। श्री नगजीराम जी ने महर्षि दयानन्द के शरीर का वर्णन किया- ''स्वामी जी महाराज के शरीर का वर्णन इस प्रकार है कि ऐसी दीर्घ पुष्ट एवं भव्यमूर्ति मैंने सिवाय आज तक ऐसी कहीं किसी को भी नहीं देखी। महात्मा के मस्तक की परिधि ढाई फीट से कम न थी और गर्दन बड़ी ऊँची, मुखारविन्द गोलाई को लिए हुए लम्बा था। नेत्र विशेष बड़े नहीं थे, कर्ण व नासिका बड़े-बड़े थे। दोनों भुज बड़े पुष्ट और आजानु लम्बे थे। वक्षस्थल किसी वीर धनुषधारी के समान चौड़ा और दृढ़ था। शरीर अति पुष्ट होने पर भी उदर छिटका हुआ नहीं था। दोनों जाघें बड़ी पुष्ट और तीन फिट की परिधि से कम नहीं थीं। पिंडलियाँ भी पुष्ट एवं साफ थीं। पैर सवा फीट के करीब लम्बे होंगे। शरीर का वर्ण गोरा था। शिर के बाल श्वेत होने लग गये थे। जिस समय वे घूमने को निकलते मुलतानी मिट्टी शरीर पर लगा, जोड़े पहन, एक दुशाले को सिर पे बाँध चद्दर से शरीर को ढक हाथ में लट्ठ कमण्डल लिये स्वयं एकाकी ही घूमने निकलते थे।

उस समय जंगल में यदि किसी अज्ञात पुरुष के अचानक दृष्टिगोचर होते तो वह इनको मनुष्य नहीं देव विशेष की मूर्ति मान चकित होके मार्ग को छोड़ एक तरफ खड़ा हो जाता। दर्शन कर बतलाने पर निर्भय हो प्रसन्न होता आपका घूमना तीन मील से कभी कम नहीं होता था। एक दिन मुझे व मेरे मित्र गौरीशंकर जी को स्वामी जी के साथ घूमने जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। किन्तु स्वामी जी के धीमे-धीमे चलने पर भी हम दोनों उनके साथ नहीं निभ सके। अतएवं ४००-५०० गज कि फासले से वापिस लौट आये।'' (यह वृत्तान्त परोपकारी पत्रिका के मई १९८६ के अंक में पृष्ठ १४ पर छपा था)

ये महर्षि के दिव्य शरीर का वर्णन हुआ, जब ऋषिवर का शरीर इतना दिव्य था तो वाणी क्यों न दिव्य होगी। महर्षि के दर्शनकर्त्ताओं ने महर्षि की सिंह गर्जना युक्त वाणी का भी वर्णन किया है। उस समय भले ही ध्वनि विस्तारक (माईक) नहीं थे तो भी महर्षि अपनी तेजस्वी वाणी को सब श्रोताओं तक पहुँचाने में समर्थ थे।

हमारे आर्य जगत् में अनेकों भजनोपदेशक व उपदेशक हुए जिनकी आवाज बड़ी बुलंद रही है, स्वामी भीष्म जी भजनोपदेश व स्वामी सत्यानन्द जी श्रीमद् दयानन्द प्रकाश के लेखक ये लोग बिना माईक के ही हजारों लोगों तक अपनी बात पहुँचा देते थे। आज भी भजनोपदेशक कुंवर भूपेन्द्र सिंह जी अलीगढ़ व पं. नौबतराम जी ऋषि उद्यान अजमेर में बिना ध्वनि विस्तारक के अपनी बात हजारों तक पहुँचा सकते हैं। जबकि इन दोनों की अवस्था अस्सी (८०) वर्ष से ऊपर है। जब ऐसे-ऐसे आर्यजनों की वाणी में बल है तो ऋषि की वाणी में कितना बल होगा स्वयं अनुमान लगाकर देखिए।

(ख) महर्षि दयानन्द जी के चित्र व चित्रों का वर्णन 'वेदवाणी' पत्रिका में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने नवम्बर १९८३ के अंक में विस्तार से किया था। उसमें महर्षि के ९ असली चित्र व उन चित्रों का वर्णन है कि वे चित्र कब और कहाँ खिंचे थे। उन ९ चित्रों के अतिरिक्त भी कुछ असली चित्र महर्षि के मिलते हैं। कुछ समय पूर्व परोपकारिणी सभा ने भी जन सामान्य के लिए महर्षि के १२ असली चित्र छपवाकर उपलब्ध कराए थे।

महर्षि दयानन्द जी से पूर्व पतन्जलि, पाणिनि से लेकर ब्रह्मा पर्यन्त (ये क्रम नीचे से ऊपर की ओर है) जितने ऋषि हुए वे महर्षि से हजारों वर्ष पूर्व हुए हैं, उस समय की परिस्थिति के अनुसार उनकी वेशभूषा, रहन-सहन आदि रहा होगा। वे केशधारी होते थे यह तो कह नहीं सकते। जो ऋषि संन्यास आश्रम का पालन कर रहे होंगे वे महर्षि मनु के अनुसार क्षौर कर्म भी करवाते होंगे।

"क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः"

इस मनु के वचनानुसार।

आप भिन्नता शारीरिक रूप से देख रहे हैं या रहन-सहन वा बौद्धिक सामर्थ्य के रूप में देख रहे हैं। हाँ ऋषित्व तो सब ऋषियों में एक जैसा होना चाहिए। ज्ञान का विषय पृथक्-पृथक् हो सकता है। कोई विज्ञान विषय प्रमुख रख कार्य करता रहा हो और चिकित्सा विषय को लेकर-इनके विषय भिन्न होने से ज्ञान भी भिन्न होगा।

अन्य ऋषियों व महर्षि दयानन्द जी में सबसे बड़ी भिन्नता तो यह है कि महर्षि दयानन्द को सबसे अधिक विरोधियों का सामना करना पड़ा। इतना सामना अन्य किसी ऋषि ने नहीं किया होगा, क्योंकि उन ऋषियों के सामने ऐसी परिस्थिति ही नहीं थी।

एक बात और स्पष्ट कर दें कि हम आर्य महर्षि के प्रति श्रद्धातिरेक में आकर कह बैठते हैं कि "ऋषि दयानन्द जैसे न हुआ है और न होगा" यह कहकर हम अन्य ऋषियों व परमात्मा का अपमान कर रहे होते हैं, महर्षि दयानन्द से पूर्व भी बहुत से योग्य ऋषि हुए हैं और परमेश्वर की व्यवस्था से इससे भी अधिक योग्य ऋषि आगे हो सकते हैं।

(ग) ऋषियों में ऐसे तुलना करना ठीक नहीं। अभी हमने पूर्व में कहा कि सभी ऋषियों का ऋषित्व तो एक ही होता है। उसका कार्य क्षेत्र भिन्न-भिन्न हो सकता है। महर्षि कपिल, कणाद आदि ने दर्शन शास्त्रों की रचना कर वेद का ही कार्य किया था। ऐसे महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य कर वेद का कार्य किया। ऐसा कदापि नहीं है कि महर्षि कपिल, कणाद आदि में वेद का भाष्य करने की योग्यता नहीं थी ओर यह योग्यता ऋषि दयानन्द में ही थी। सभी ऋषि लोग वेद भाष्य करने में समर्थ होते थे क्योंकि ऋषि कहते ही मन्त्रार्थदृष्टा को हैं। जब महर्षि दयानन्द से पूर्व के ऋषि भी वेद भाष्य की योग्यता रखते थे और महर्षि दयानन्द भी रखते थे तो इनमें कौन महान् और कौन हीन ऐसा नहीं कह सकते। महर्षि दयानन्द भी महान् थे और अन्य ऋषि भी महान् थे। ऋषियों में तुलना करके हमें एक को महान् और दूसरे को हीन सिद्ध करने का कोई अधिकार नहीं है। अस्तु। शेष प्रश्नों का उत्तर आगे लिखेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञास

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम- आनन्द रस धारा
लेखक- प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली।
पृष्ठ- १४४ **मूल्य**- ९० रु. मात्र

महर्षि दयानन्द के विचारों से देशी विदेशी बहुत से प्रबुद्ध जन प्रभावित होकर आर्यसमाज से जुड़ें। जुड़कर मानव जाति के लिए कार्य किया। महर्षि के जीवन काल व उनके परलोक गमन के बाद भी ऐसे अनेकों महान् पुण्यात्मा जन ऋषि मिशन से जुड़े कि उन पुण्यात्माओं ने वेद व देश राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने में अपने को धन्य समझा। धर्मध्वजी श्रीयुत् पण्डित लेखराम, महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं चमुपति जी, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द आदि ऐसे अनोखे रत्न महर्षि के विचारों से आर्य समाज को मिले जिन्होंने विश्वभर में आर्य समाज का नाम प्रकाशित किया।

आर्य समाज ने विद्वान् अध्यापक, योग्य लेखक, सम्पादक, प्रबुद्ध प्रचारक, वक्ता, पुरोहित, सामाजिक कार्यकर्त्ता इस देश को दिये हैं, केवल इन्हीं लोगों को ही नहीं अपितु योग्य साधु संन्यासी भी आर्य समाज ने दिये हैं। स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, महात्मा आनन्द स्वामी जैसे योग्य संन्यासी हुए जिन्होंने अपनी वाणी व पुरुषार्थ से आर्यों में नई उमंग भरी।

इन सभी महापुरुषों की जीवनियाँ-लेखन के धनी, आर्यसमाज के ऊपर प्रहार कर्त्ताओं के लिए सदा अपनी लेखनी उत्तर देने में उद्यत आर्यसमाज के इतिहास की सर्वाधिक जानकारी रखने वाले, विश्व के सर्वाधिक जीवन चरित लिखने वाले मान्यवर प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी हैं। इन जीवनियों में महात्मा आनन्द स्वामी की जीवनी नहीं लिखी गई थी, अब वह काम भी मान्य जिज्ञासु जी ने ''आनन्द रसधारा'' पुस्तक लिखकर पूरा कर दिया है।

इस पुस्तक का प्रकाशन सबसे अधिक आर्य साहित्य देने वाला, लगभग नब्बे (९०)वर्षों से आर्य साहित्य का प्रकाशन कर समाज को दिशा देने वाले प्रकाशक ''विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द'' ने किया है। पुस्तक के प्रकाशक मान्य अजयकुमार जी ने प्रकाशकीय बड़े भाव से लिखा है। इस जीवन चरित के विषय में अपने भाव व्यक्त करते हुए लिखा-''देर से आर्य जनता आपके एक सुन्दर प्रेरक जीवन चरित को माँग करती चली आ रही थी। हर्ष का विषय है कि विश्व में सर्वाधिक जीवनियाँ लिखने का कीर्तिमान् बना चुके हमारे लेखक श्री राजन्द्र जिज्ञासु ने इस चुभते अभाव की कमी पूरी करते हुए 'आनन्द रसधारा' नाम से उनका एक पठनीय जीवन चरित आपके हाथों में पहुँचा दिया है। यह पुस्तक आपने एक अलग शैली से लिखी है।''

महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन चरित को लिखने का विचार लेखकके मन में स्वामी जी के जीवन काल से ही था, किन्तु यह कार्य लेखक के जीवन की साँझ में हुआ। इस विषय में लेखक अपने प्राक्कथन में लिखते हैं-''जीवन की साँझ का विचार करके मैं कई महीनों से महात्मा जी पर एक पठनीय पुस्तक लिखने का निर्णय ले चुका था.....।'' महात्मा जी की विशेषता को बताते हुए लेखक लिखते हैं-''महात्मा आनन्द स्वामी वेदभक्त, ऋषिभक्त, प्रभुभक्त, देशभक्त, जातिभक्त और लोकसेवक पहले थे और नेता बाद में थे। नेता कोई भी हो उसके जीवन के साथ छोटा-मोटा कोई न कोई विवाद जुड़ जाता है। 'आनन्द रस धारा' में विवादों से बचकर ऐसी सामग्री दी है जिससे अपने पराये सबको ऊर्जा प्राप्त होगी। पाठकों में नवजीवन का संचार होगा। मनु महाराज ने धर्म के दश लक्षण बताए हैं। ऋषि दयानन्द की धर्म की परिभाषा पढ़िये। योगदर्शन में वर्णित यम-नियमों व आठ अंगों पर विचार करके-इन्हें सामने रखकर 'आनन्द रस धारा' को कसौटी पर कसिये फिर आपको पूरा लाभ मिलेगा।''

इस पुस्तक को लेखक ने आठ भागों में विभक्त किया है। पहला भाग-बाल्यकाल से यौवन की चौखट तक जीवन झाँकी। दूसरा भाग-अष्टांग योग की कसौटी पर। तीसरा भाग-जीवन के कुछ विशेष प्रसंग। चौथा भाग-हैदराबाद सत्याग्रह के नर नायक। पाँचवाँ भाग-संन्यास दीक्षा। छठा भाग-हैदराबाद में एक बड़ा ऑपरेशन। सातवाँ भाग-एक निराधार कथन-मिथ्या सोच। आठवाँ भाग-महाप्रयाण-वे चलते-चलते चल बसे।

आठ भागों में विभक्त यह पुस्तक अपने अन्दर महात्मा जी के अनेक जीवन प्रसंगों को संजोये है। पाठक इस आनन्द रस धारा को पढ़कर अवश्य ही आनन्द में सराबोर होंगे। सुन्दर आवरण से सुसज्जित, उत्तम कागज व छपाई से युक्त यह पुस्तक पाठकों को बहुत प्रेरणा देने वाली सिद्ध होगी। ऐसी आशा है।

- आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

संस्था - समाचार

१५ से ३१ जुलाई २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ, सम्बन्धियों की पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से सम्बन्धित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं चर्चा होती है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर प्रथमावृत्ति, दर्शन एवं रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में अथर्ववेद के प्रथम सूक्त की व्याख्या करते हुए **डॉ० धर्मवीर जी** ने बताया कि इसके ऋषि-अथर्वा और देवता-वाचस्पति हैं। चारों वेदों में ऋग्वेद ज्ञान काण्ड, यजुर्वेद कर्म काण्ड, सामवेद उपासना काण्ड और अथर्ववेद विज्ञान काण्ड है। जो चञ्चल न हो, उसे अथर्व कहते हैं। अथर्ववेद का ज्ञान दृढ़ है, स्थिर है। मन्त्रों के ऊपर ऋषि लिखे होते हैं, वे मन्त्रों के कर्ता नहीं है, किन्तु द्रष्टा हैं, अर्थात् उन-उन मन्त्रों के अर्थ जानने, व्याख्या करने वाले तथा मन्त्रों के वक्ता (पात्र) भी हैं। देवता उन मन्त्रों के विषय होते हैं। प्रत्येक वेद मन्त्र एक निश्चित छन्द में है। छन्दों के स्वर और अक्षरों की संख्या भी निश्चित होती है। ये चारों-ऋषि, देवता, छन्द और स्वर मन्त्र का अर्थ जानने में सहायक होते हैं, इसलिये इनका ज्ञान होना आवश्यक है। परमात्मा ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों की आत्मा में चारों वेदों का अलग-अलग प्रकाश किया। पाश्चात्य विद्वान् वेद को ऋषियों के द्वारा लिखा हुआ मानते हैं, जो ठीक नहीं है। उत्पत्ति काल के विषय में भी वे भ्रमित हैं। उनका मानना है कि वेद लगभग कुछ ईसा पूर्व के हैं। इन सब भ्रान्तियों का निवारण महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य, पाणिनीय व्याकरण, पतंजलि महाभाष्य, यास्क कृत निरुक्त, छ: दर्शनों, प्रामाणिक ग्यारह उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति एवं अन्य आर्ष ग्रन्थों के पढ़ने से ही सम्भव है। इस सूक्त के मन्त्रों में ज्ञान के प्राप्त करने, ज्ञान को स्मरण रखने और ज्ञान के अनुसार चलने की चर्चा है, अर्थात् पहले जानो, समझो, फिर करो।

इस सूक्त के प्रथम मन्त्र में बताया गया है कि त्रिसप्ता:- तीन और सात पदार्थ विश्व में नाना रूपों को धारण करके सब जगह विचर रहे हैं, विद्यमान हैं। प्रकृति में तीन गुण- सत्, रज और तम साम्यावस्था में होते हैं। सात पदार्थ हैं- महत् तत्त्व, अहंकार और पंच तन्मात्रा। जो कुछ संसार में नाना प्रकार के पदार्थ दिखाई दे रहे हैं, वे इन्हीं तीन और सात के विभिन्न रूप हैं। सत्, रज और तम मन से जुड़े हुए तीन गुण हैं। इन पदार्थों के गुणों को जानने वाला वाचस्पति है। वह हमें ज्ञान दे दे तो हम इस संसार के पदार्थों का लाभ उठा सकते हैं, अपने शरीर में बल प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी वस्तु के जानने का उद्देश्य सुख प्राप्त करना होता है। प्रत्येक छोटी-बड़ी वस्तु के उपयोग के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। यह संसार परमात्मा का बनाया हुआ है, इसलिये इसका सम्पूर्ण ज्ञान वही देता है। वह मुझे इन सब का ज्ञान प्राप्त करावे। इस सूक्त में वाचस्पति को वसोष्पते भी कहा गया है, जिसका अर्थ है कि जो विद्वान् होगा वह धनवान भी होगा। जिसके पास विद्या नहीं होती, वह धन प्राप्त नहीं कर सकता। विद्या चाहे पढ़ने-पढ़ाने, व्याख्यान देने, ग्रन्थ लिखने की हो, चिकित्सा अथवा शिल्प सम्बन्धी

या व्यापार, व्यवसाय और उद्योग सम्बन्धी हो। यद्यपि विद्या पढ़ते समय विद्यार्थी जीवन में या शोध कार्य करते हुए अर्थ प्राप्ति सम्बन्धी कोई कार्य नहीं हो सकता। ब्राह्मण को बिना कारण ही छः अंगों सहित वेद पढ़ना चाहिये। वेद में वह रम जाए, उसका मन लग जाए, पढ़ने में उसे आनन्द आए। पढ़ा और सुना हुआ, पढ़ने और सुनने वाली की बुद्धि में स्थिर रहे। मनु जी महाराज कहते हैं कि जैसे-जैसे व्यक्ति वेद शास्त्र को समझने लगता है, उसे जानता है,वैसे-वैसे उसमें आनन्द आने लगता है।

प्रातःकालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने अन्य महापुरुषों की अपेक्षा विशेष कार्य किया। अन्य महापुरुषों ने हमें डूबने से बचना सिखाया, महर्षि ने हमें तैरना सिखाया। संसार में लोगों का व्यवहार दो प्रकार का है। पहले प्रकार के लोग असंभव को संभव करना चाहते हैं। संसार के लोग असम्भव की ओर ज्यादा दौड़ लगा रहे हैं। मनुष्य इस शरीर को सदा सम्भाल कर रखना चाहता है और उसके लिये सभी प्रकार की चेष्टाएँ करता है। शरीर रक्षा के लिए धन, परिवार, संस्था आदि सहारों की आवश्यकता होती है। यह शरीर नाशवान है, सदा नहीं रहेगा। जो व्यक्ति शरीर, पद, मान, प्रतिष्ठा को सदा रहने वाला मानकर चलते हैं, वे समाज में बुराइयों को बढ़ावा देते हैं। चोरी, ठगी, तोड़फोड़ और दूसरों को अपमानित करना आदि बुरे काम करते हैं। दूसरे वे हैं, जो संभव को प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करते हैं। जो संभव है, शाश्वत है, टिकने वाला है उसकी ओर दौड़ कम है। ऐसे लोग बहुत कम हैं जो आत्मा, परमात्मा और धर्म के विषय में जानकर उनके अनुकूल आचरण करते हैं। संभव की ओर चलने वालों का परमात्मा ही सहारा होता है।

आगे आपने कहा कि आत्मा अमर है, सदा से था और सदा रहेगा। जो ऐश्वर्यों को प्राप्त करना चाहता है, उसे छः दोषों को छोड़ देना चाहिये। ये छः दोष हैं- १. निद्रा, २. तन्द्रा, ३. भय, ४. क्रोध, ५. आलस्य और ६. दीर्घसूत्रता। जो संभव को चाहता है, वह अल्प निद्रा और अति निद्रा दोनों को छोड़ दे। उचित निद्रा से दिनचर्या और स्वास्थ्य दोनों ठीक रहते हैं। कुत्ते जैसी नींद होनी चाहिये जो गहरी नींद से भी शीघ्र जाग जाता है। ब्रह्म विद्या अत्यंत सूक्ष्म विद्या है, उसे सुनते समय ऊँघना नहीं चाहिये। ईमानदार कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति निर्भीक होता है। बेईमान कामचोर अयोग्य व्यक्ति भयभीत होता है। उसे ऐश्वर्य की प्राप्ति नहीं होती। क्रोधी व्यक्ति की बौद्धिक और शारीरिक शक्ति का ह्रास होता है, इसलिये क्रोध करना छोड़ दें। सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति और धर्म की उन्नति में आलस्य बहुत बड़ी बाधा होती है। आलस्य छोड़कर अपने कार्यों को ठीक समय पर पूरा करना चाहिये। हमारे देश की कानून व्यवस्था दीर्घसूत्री है। दीर्घसूत्री विनाश को प्राप्त होता है। वर्षों बीत जाते हैं, मुकदमों का फैसला नहीं हो पाता है। जो संभव को चाहता है, उसे संकल्प करना होगा। यम-नियम के पालन के लिये संकल्प करना चाहिये। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये संकल्प आवश्यक है। परमपिता परमात्मा ने हमें बहुत बड़ा अवसर दिया है। इस अवसर का लाभ उठाकर जितनी चाहें, उतनी उन्नति कर सकते हैं। जीवन में उपलब्धियों, श्रेष्ठ पदार्थों का संग्रह बहुत कठिन होता है। संग्रहीत पदार्थों की रक्षा उससे भी कठिन होती है। प्राणियों में मनुष्य शरीर सर्वोत्तम है, मनुष्यों में विद्वान् श्रेष्ठ है, विद्वानों में वेदों के विद्वान् श्रेष्ठ हैं, उन विद्वानों में स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित करके मुक्ति के लिये तपस्या करने वाला श्रेष्ठ है।

आगे आप कहते हैं कि सबसे रुचिकारक विषय ईश्वर का आनन्द है। ईश्वर में दुःख का लेश भी नहीं है। ब्रह्म अत्यन्त रुचिकारक है। उसकी ओर बढ़ने वाले विद्वान् संन्यासी की रुचि ईश्वर में होती ही है। जब वह संन्यासी ईश्वर के विषय में अन्य जनों को बताता है तो सुनने वालों की रुचि भी बढ़ती चली जाती है। जो ईश्वर की भक्ति करता है, उसी की इन्द्रियाँ वश में होती हैं। ऋषियों ने परमेश्वर से साक्षात् ज्ञान लेकर परम्परा रूप में वेद के सिद्धान्तों को हमें दिया है। जो व्यक्ति वेद के सिद्धान्तों के जितना निकट रहता है, वह उतना ही निर्भ्रान्त होकर अपना जीवन बिताता है। जो वैदिक सिद्धान्तों से दूर रहता है, वह भ्रान्त होकर नष्ट हो जाता है। नीतिकारों के अधिकांश सिद्धान्त भी वेदानुकूल हैं। राजा अनुचित सलाह देने वाले मन्त्री, ज्योतिषी, चाटुकार और चारण-भाट लोगों के कारण

नष्ट हो जाता है। अधिक लाड़-प्यार करने से संतान बिगड़ जाती है, संतानों के बिगड़ जाने से कुल का नाश हो जाता है। प्रेम और विश्वास के बिना मित्रता नष्ट हो जाती है। निकटता के बिना स्नेह नष्ट हो जाता है। अनीति से समृद्धि चली जाती है। प्रमाद से धन नष्ट हो जाता है। नित्य प्रति देखभाल नहीं करने से खेती नष्ट हो जाता है। नीच, दुर्जन मनुष्यों का संग करने से शिष्टाचार चला जाता है। वेद, वेदांगों के नित्य अध्ययन नहीं करने से ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व नष्ट हो जाता है। सांसारिक विषयों में फँसने वाला संन्यासी नष्ट हो जाता है।

रविवारीय प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने अर्थ और अर्थशास्त्र पर समसामयिक चर्चा करते हुए कहा कि सभी मनुष्यों को सुख के साधनों को प्राप्त करने के लिये धन की आवश्यकता होती है। वेद आदि शास्त्रों में धर्म का पालन करते हुए धन कमाने का उपदेश है, जुआ आदि से धन प्राप्ति का निषेध है। वेदों में समृद्धिशाली जीवन की कामना है जो धन प्राप्ति से ही संभव है। व्यक्तिगत, परिवार, संस्था और राष्ट्र की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति धन के बिना सम्भव नहीं होती है। भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा, शिक्षा, यातायात, सुरक्षा, व्यापार, व्यवसाय, पशुपालन, दूरसंचार एवं उद्योग धन्धों आदि के लिये धन की अत्यंत आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में वस्तु विनिमय का कुछ सीमा तक प्रचलन है, जैसे अन्न के बदले सब्जी आदि लेना तथा बढ़ई, लोहार से कृषि यन्त्र आदि बनवाकर पारिश्रमिक के रूप में अन्न देना, लेकिन नगरों में प्रत्येक आवश्यक वस्तु को खरीदने के लिये रुपयों की आवश्यकता होती है। विभिन्न वस्तुओं को धन से प्राप्त करने के लिए राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक देश में सरकारी और निजी बैंक होते हैं। हमारे देश में केन्द्र सरकार और रिज़र्व बैंक द्वारा नोट छापे जाते हैं। इन नोटों को छापने और बाजार मूल्य को नियंत्रित करने का उत्तरदायित्व रिज़र्व बैंक का होता है। अन्य बैंक जनता के धन की सुरक्षा और कर्ज़ आदि देने का कार्य करते हैं। बैंक अपने पास जमा धन में से साठ प्रतिशत कर्ज के रूप में जरूरतमंद लोगों को देती है और बदले में उचित मात्रा में ब्याज लेती है। कोई भी वस्तु सभी क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं होती है, इसलिये जो वस्तु किसी क्षेत्र में नहीं है, उस क्षेत्र के व्यापारी अन्य क्षेत्रों से खरीद कर जनता को उचित मूल्य पर बेचते हैं। इस प्रकार के विभिन्न उद्योगों और व्यापार को सरकार लायसेंस प्रणाली से नियंत्रित करती है। व्यापार, उद्योग आदि को केन्द्रीय बैंक द्वारा भी नियंत्रित किया जाता है जिससे सट्टेबाजी, कालाबाजारी न हो तथा महँगाई नियंत्रण में रहे। पुराने नोटों को नष्ट करना और नये नोट छापना रिज़र्व बैंक का कार्य है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार विभिन्न करों के रूप में आय प्राप्त करती हैं और जनता के कल्याण में उचित ढंग से खर्च करती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में नोटों के मूल्य पर नियंत्रण करना भी रिज़र्व बैंक की जिम्मेदारी है। राष्ट्र के विकास के लिये सरकार और बैंक-दोनों ही कार्य करते हैं।

सायंकालीन सत्संग में 'उपदेश मंजरी' पुस्तक का पाठ एवं चर्चा होती है। इस क्रम में **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान बहुत थोड़ा ही रहता है, उससे विशेष प्रगति नहीं हो सकती। जीवन में उन्नति के लिये ज्ञान प्राप्ति आवश्यक है, इसलिये नया जानने की इच्छा हमेशा बनी रहती है। कोई भी मनुष्य किस विषय का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है-यह उसके संस्कारों पर निर्भर करता है। नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करने में तीन कारण होते हैं- १. देश २. काल और ३. वस्तु। जब किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं तो यदि ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का मन से और मन का आत्मा से सम्बन्ध होगा, तभी स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्ति के लिये समय लगाना भी आवश्यक है। ज्ञान प्राप्ति के लिये विषय से सम्बन्धित वस्तुएँ भी उपलब्ध होनी चाहिये। अच्छे संस्कार होने पर मनुष्य ज्ञान प्राप्त करके अच्छे कर्म करता है। बुरे संस्कार होने पर ज्ञान प्राप्त करके बुरे कार्य करता है। पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर इस जन्म में ज्ञान प्राप्ति में रुचि होती है।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **ब्र. रविशंकर जी** ने संगठन के विषय में बताया कि जब हमारा परस्पर किसी विषय पर मतभेद हो तो दोनों पक्षों को चाहिये कि पहले विषय का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करें,

पश्चात् विरुद्ध वादों को छोड़ प्रीति से चर्चा करें। इससे हम ठीक-ठीक सत्य तक पहुँचकर विरोध को समाप्त कर सकते हैं। **ब्र. मनोज जी** ने कहा कि हमारे देश में महापुरुषों के बारे में अनेक भ्रान्तियों का प्रचलन है। श्री कृष्ण, श्री हनुमान, माता सीता एवं अन्य महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को मात्र सुनने और ठीक से न समझने के कारण अधिकांश लोग भ्रमित हैं और काल्पनिक घटनाओं पर विश्वास करते हैं। उन भ्रान्तियों का निवारण तर्क और प्रमाण से होना चाहिये, जिससे हम सभी लोग उन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर स्वयं भी लाभान्वित हों और दूसरों का भी मार्गदर्शन कर सकें। **ब्र. देवेन्द्र जी** ने कहा कि जो मनुष्य तपस्वी, धार्मिक, विद्वान्, सदाचारी, शुभ गुण सम्पन्न, मधुरभाषी, धन का सदुपयोग करने वाला, मिलनसार, संवेदनशील, धैर्यवान् और कर्त्तव्यनिष्ठ होता है, वही ईश्वर के निकट जा सकता है तथा उससे रक्षा पा सकता है। उसी का जीवन सफल होता है। चार प्रकार के लोग ईश्वर की भक्ति करते हैं- १. जो मनुष्य दुःखी है वह अपनी रक्षा के लिए ईश्वर को भजता है, २. जो ईश्वर की उपासना के लाभ जानना चाहता है, ३. जो सांसारिक सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये भक्ति करता है तथा ४. जो छल कपट से रहित विरक्त मनुष्य निष्काम भाव से ईश्वर की उपासना करता है।

शनिवार सायंकालीन सत्र में **श्री ओमपाल जी** ने आर्य समाज के नियमों और आर्य समाज द्वारा वर्तमान में चल रहे विभिन्न गतिविधियों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर ले जाने के लिये वेदोक्त कर्त्तव्यों का पालन करना आवश्यक है। ईश्वर की भक्ति से ही हम अपने कर्त्तव्यों को ठीक से समझ सकते हैं। योगाभ्यास करते हुए ही हम अपने शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक बल का अधिक से अधिक विकास और उपयोग कर सकते हैं। **माता रश्मि जी** अथर्ववेद के ग्यारहवें काण्ड के चौथे सूक्त के पहले मन्त्र 'प्राणाय नमो यस्य.....प्रतिष्ठितम्।' पर चर्चा करते हुए बोलीं कि इस मन्त्र में परमपिता परमात्मा के ऐश्वर्यों का वर्णन है। सबमें व्यापक वह ईश्वर जड़ तथा चेतन जगत् को धारण और प्रकाशित करने वाला है। उसका बड़ा ऐश्वर्य है, वह गुणों का भण्डार है, वही हम सबका कल्याण करता है। उसको ही नमन करना चाहिये। उसके गुणों को जानकर ही उसके प्रति आकर्षण होता है। जो संसार के आकर्षण में बह जाता है, वह परमात्मा की ओर आकर्षित नहीं हो पाता। जो उसके गुणों को जान लेता है, वह सच्ची भावना से उससे जुड़ जाता है।

*** डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) १-३ जुलाई २०१६: आर्यसमाज सूरजकुण्ड, मेरठ के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

(ख) २४ जुलाई २०१६: नारनौल, हरियाणा।

(ग) २९-३१ जुलाई २०१६: बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में सत्संग।

आगामी कार्यक्रमः-(क) ७ अगस्त २०१६: श्री सुरेश अग्रवाल जी के जन्मदिवस पर अहमदाबाद में।

(ख) ८-१४ अगस्त २०१६: ग्रेटर कैलाश भाग-२, दिल्ली में वेद कथा।

(ग) १९-२२ अगस्त २०१६: जनकपुरी ब्लॉक-सी, दिल्ली में वेद कथा।

(घ) २२-२८ अगस्त २०१६: आर्यसमाज कालकाजी, दिल्ली में वेद कथा।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) ३ जुलाई २०१६: आर्यसमाज अजमेर में व्याख्यान।

(ख) १५-१७ जुलाई २०१६: वैदिक भक्ति साधना आश्रम, रोहतक में यज्ञ-प्रवचन।

(ग) २३-२४ जुलाई २०१६: पुणे में युवकों के लिए आयोजित सेमिनार में सैद्धान्तिक चर्चा।

आगामी कार्यक्रमः-(क) ३१ जुलाई-७ अगस्त २०१६: जिला सभा कानपुर, उ.प्र. में वेद प्रचार सप्ताह।

(ख) १४-१८ अगस्त २०१६: आर्यसमाज गोंडा, उ.प्र. में प्रवचन।

(ग) २१-२५ अगस्त २०१६: वेद मन्दिर कानपुर में वेद प्रचार कार्यक्रम।

(घ) २७-३० अगस्त २०१६: आर्यसमाज टंकोर, झुँझनू, राज. के वार्षिकोत्सव पर सामवेद पारायण यज्ञ।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३८

त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुतां गणः।
त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत्।।

– ऋक्. १०/१३७/५

प्रसंग रोग से संरक्षण का है। देवता रोगी की रक्षा करें, मरुत्गण रोगी की रक्षा करें। समस्त भूत रोगी की रक्षा करें, जिससे यह व्यक्ति रोग रहित हो सके।

प्रश्न उठता है- यहाँ चेतन की बात भी जा रही है या जड़ की। यहाँ प्रसंग जो भी हो, शब्दार्थ दोनों हो सकते हैं। देव शब्द चेतन और जड़ दोनों का वाचक है। देव में परमेश्वर, मनुष्य, प्राणी तक सबका ग्रहण हो सकता है। मरुद् भी जड़-चेतन दोनों का वाचक है। चेतन में योद्धा या सैनिक के अर्थ में इसका प्रयोग बहुधा वेद में आता है। भूत भी जड़ और चेतन हैं। रोगी को चेतन तो ठीक कर ही सकते हैं, परन्तु ऊपर से प्रसंग रोग और औषध का चल रहा है। तब देव मरुत्, भूत, चेतन के वाचक नहीं होंगे।

यहाँ पर रोग निवारक जड़ पदार्थों की चर्चा चल रही है। मनुष्य को सबसे आवश्यक जीवनीय पदार्थों की चर्चा है। जो वस्तुएँ मनुष्य को जीवित रखने में उपयोगी है, वही स्वास्थ्य की उन्नति और सुरक्षा में भी आवश्यक हैं। गत मन्त्रों में जीवनीय तत्त्वों के रूप में जलवायु की अनेकशः चर्चा हुई हैं। उसी प्रसंग में देवता कौन हैं जो रोगी को रोगरहित करने में प्रमुखता से उपयोगी हैं। मन्त्र का अर्थ करते हुए स्वामी ब्रह्म मुनि कहते हैं- **देवाः रश्मयः।** यहाँ देवता का अर्थ सूर्य की रश्मियाँ हैं। यह बात सर्वविदित है कि संसार में सूर्य ही जीवन का आधार है। जहाँ सूर्य ऊर्जा देता है, वहाँ सूर्य रोगाणुओं को समाप्त करने वाला प्रथम अस्त्र है। वेद कहता है- **उघट रश्मिभिः कृमीणहन्ति।** उदय होता हुआ सूर्य रोग कृमियों को नष्ट करता है। स्वस्थ दशा में भी सूर्य रश्मियों का सेवन करने का विधान है। आजकल सूर्य के प्रकाश में रहने की प्रेरणा की जाती है। चिकित्सकों का विचार है कि प्रत्येक मनुष्य को दिन के कुछ घण्टे सूर्य के प्रकाश में व्यतीत करने चाहिए, इससे शरीर के रोगाणु नष्ट होकर, जीवनीय शक्ति बढती है। कहा जाता है कि सूर्य के प्रकाश में विटामिन डी की प्राप्ति होती है। इससे हमारे शरीर में दृढता आती है।

वेद कहता है- मनुष्य को घर भी ऐसा बनाना चाहिए जिसमें सूर्य की किरणें प्रचुरता से प्रवेश कर सकें। मन्त्र है- **यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।** घर के अन्दर सूर्य की किरणें बहुत मात्रा में आयें। वेद में गो शब्द किरणों का वाचक है, **भूरि शृंगा** बहुत प्रकार से गहराई तक घर में प्रवेश करें। जिस घर में सूर्य की किरणें प्रवेश करती हैं, उस घर में रोग के कृमि नष्ट हो जाते हैं। इसलिए मन्त्र में कहा गया है कि सूर्य की किरणें रोगी की रोग से रक्षा करें। जहाँ अंधेरा, सीलन होता है, प्रकाश की कमी होती है, वहाँ दमा, खांसी आदि रोग बढते हैं।

मन्त्र में आगे कहा गया है- **त्रायतां मरुतां गणः।** मरुतों के गण रोगी की रक्षा करें। यहाँ मरुत् का सैनिक अर्थ घटित नहीं होता, यहाँ सूर्य के प्रकाश के साथ-साथ शुद्ध वायु की संगति बैठती है। अतः रोगी को प्रकाश के साथ शुद्ध वायु की प्राप्ति होनी आवश्यक है। रोगी के कमरे में स्वच्छ हवा का आवागमन सदा बना रहे तो रोगी को स्वास्थ्य लाभ शीघ्र होता है। आज और पुराने समय में भी रोगी को स्वास्थ्य लाभ के लिये पर्वतीय स्थानों पर जाने का परामर्श दिया जाता है। पहले यक्ष्मा के रोगी को चिकित्सा के लिये पर्वत क्षेत्रों में चिकित्सालय बनाये गये थे। आज भी उत्तम जलवायु से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिये शुद्ध वायु और सूर्य के प्रकाश की अधिकाधिक प्राप्ति हो, वहाँ जाना चाहिए या अपने घर में ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए। यहाँ पर मरुतों से प्रार्थना की गई है, वे रोगी की रक्षा करें। तीसरे चरण में कहा गया- **त्रायन्तां विश्वा भूतानि।** विशेषरूप से सूर्य के प्रकाश का शुद्ध वायु के रूप में उल्लेख किया गया है। सामान्य रूप से सभी पदार्थ या वस्तुएँ, चाहे वे औषध के रूप में हों अथवा वातावरण या प्रयोग में आने वाली वस्तु के रूप में हों। सभी रोगी के अनुकूल और उसके स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये उपयोगी होनी चाहिए। विश्वा का अर्थ विश्वानि अर्थात् सब भूत, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी आदि में प्राप्त होने वाले सभी पदार्थ रोगी को रोग से बचाने वाले हों। कभी कभी

रोगी समझता है- केवल औषध खाने मात्र से वह स्वस्थ हो जायेगा, उतना पर्याप्त नहीं है। चिकित्सा में कहा जाता है कि जितना महत्त्व औषध का है, उतना ही महत्त्व पथ्य का है। यदि पथ्य नहीं है तो औषध व्यर्थ हो जाती है तथा पथ्य हो तो रोगी को कम औषध से भी स्वस्थ किया जा सकता है। वास्तव में रोग को शरीर स्वयं दूर करता है और वस्तुएँ तो सहायक मात्र है। अत: चिकित्सक रोगी को परामर्श देते हैं- स्वास्थ्यवर्धक अन्नपान सेवन के साथ पूर्ण विश्राम करना चाहिए। मूलभूत बात है- प्रत्येक वह कार्य और वस्तु उपयोग में आती है, जिससे रोगी रोग से मुक्त हो, इसीलिए कहा गया है- **यथा यमरपा असत्।** कैसे भी हो, रोगी को रोग मुक्त करना, चिकित्सा का उद्देश्य है।

क्रमश: .....

जाने से समाज की बहुत क्षति हुई है।

- राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२१२६

आर्यसमाज के हितैषी और सहयोगी श्री मुंशीराम सेठी नहीं रहे। फ्रन्टीयर बेकरी के स्वामी श्री सेठी जी सामाजिक कार्य करने वाली संस्थाओं को उदारतापूर्वक दान देने वाले आर्य पुरुष के रूप में जीवनभर प्रतिष्ठित रहे। भारत विभाजन के पश्चात् आपने पाकिस्तान से भारत आकर दिल्ली में बिस्कुट फैक्ट्री लगाकर कारोबार आरम्भ किया और अपने परिश्रम के बल पर उस व्यवसाय को शीर्ष तक पहुँचाया। गुरुकुलों एवं गोशालाओं के आप सतत् सहयोगी थे। परोपकारिणी सभा सहित आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करना उनकी दिनचर्या का अंग हुआ करता था। ८६ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। **परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।**

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 0008000100067176

IFSC - PUNB0000800

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

प्रतिक्रिया

योग साधना शिविर-संस्मरण

पिछले अनेक वर्षों से परोपकारी में शिविर की सूचना पढ़ा करता था किन्तु दृढ़ इच्छा की कमी के कारण उसमें सम्मिलित होना सम्भव न हो पा रहा था। इस बार कुछ स्वाभाविक रूप से उत्कंठा दृढ़ हो गई और फरवरी में ही जून के शिविर की बुकिंग करवा दी। अपने स्वहित के अलावा ऋषि उद्यान में चल रही गतिविधियों एवं डॉ. धर्मवीर जी तथा अन्य सभी आदरणीय महानुभावों के पुरुषार्थ को प्रत्यक्ष देखना भी एक कारण था, सो निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यथासमय मैं ऋषि उद्यान में उपस्थित हुआ।

सर्वप्रथम तो कार्यालय में पंजीकरण करवाना था, सो थोड़ी देर में बड़े आराम से हो गया, हालाँकि उस समय भी १५ से २० शिविरार्थी कार्यालय में उपस्थित थे, पर जैसे कि सभी पहले से तैयार होकर आये थे, कोई हो-हल्ला नहीं था। सभी के काम बड़े धैर्य और शान्ति से सम्पन्न हो रहे थे। प्रथम दिन सायंकाल ही अगले दिन से नियमित प्रारम्भ होने वाले शिविर की सामान्य सूचनाएँ दी गईं। यद्यपि मेरे लिये दिनचर्या की कोई भी चीज नई नहीं थी, पुनरपि स्थान एवं कार्यक्रम अवश्य भिन्न था। सो बिना कष्ट के दिनचर्या के उपक्रमों को सहज रूप में निभाता रहा और उनसे भरपूर लाभ एवं आनन्द उठाता रहा। यद्यपि सामान्य जीवन एवं वहाँ की स्थिति में काफी अन्तर रहता है, जितने भी बौद्धिक श्रवण के अथवा क्रियात्मक ध्यान आदि के कार्यक्रम थे, सभी को समान रूप से महत्व देते हुए, किसी भी कार्यक्रम को मिस नहीं किया। उसमें एक कारण यह भी था कि उसी खास मकसद से ही वहाँ गया था।

शिविर में मंच से अपना-अपना प्रस्तुतीकरण देने वाले सभी विद्वान् अपने विषय, कार्य एवं कौशल से परिपूर्ण प्रत्यक्ष हुए। ऐसा लगता था, मानो सभी अपना सम्पूर्ण सौ प्रतिशत शिविरार्थियों पर उँड़ेल रहे हों, निस्संदेह किसी ने कोई कसर उठा न रखी थी। उन सभी विद्वद्जनों (सर्वश्री डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य सोमदेव जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य सत्यजित् जी एवं आचार्य सत्येन्द्र जी) का जितना आभार माना जाए, कम है, क्योंकि सबसे विशेष बात यह है कि ये सभी महानुभाव निष्काम भाव से निरन्तर अपनी उच्च कोटि की अमूल्य सेवाएँ देते जा रहे हैं। प्रभु से मेरी नम्र प्रार्थना है कि इन सभी को तथा संस्था के हित में अन्य जो भी महानुभाव अपना कुछ भी योगदान कर रहे हैं, उन्हें दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं श्रेष्ठतम सहयोगी प्रदान करें।

यद्यपि शिविर की अनेक बातें उल्लेखनीय हैं, पर यदि वहाँ रहकर तपपूर्वक विद्याध्ययन कर हर ब्रह्मचारी को याद न किया जाए तो धृष्टता होगी। ये सभी ब्रह्मचारी अपने आचार्यों के निर्देशानुसार शिविर की लगभग सभी व्यवस्थाओं (जिनमें भोजनालय का भोजन, यज्ञशाला का यज्ञ, प्रात:कालीन आसन, प्राणायाम प्रमुख हैं) का संचालन पूर्ण कुशलता से करते दिखे। उनमें सर्वोपरि आचार्य कर्मवीर जी अपने विभिन्न कार्य कौशलों (जिनमें आसन, प्राणायाम करवाना, सूचनाओं का आदान-प्रदान करना एवं आवश्यकतानुसार मंच संचालन आदि प्रमुख हैं) से प्राय: सभी समयों में दैदीप्यमान दिखाई दिए। इन सभी के भी मैं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। इस शिविर में १० वर्ष की आयु से ८४ वर्ष तक की आयु के शिविरार्थियों ने भाग लिया, एक उल्लेखनीय बात वहाँ का शान्त और रमणीय वातावरण है। अजमेर की प्रसिद्ध आनासागर झील के सुरम्य तट पर स्थित यह ऋषि उद्यान अनायास ही मन को मोहित कर लेता है। यहाँ बना हर एक भवन उत्कृष्ट कला का शानदार नमूना है, चाहे वो अनुसंधान भवन हो, योगमन्दिर हो या भव्य एवं विशाल यज्ञशाला- सभी एक से बढ़कर एक हैं।

पाठक महानुभावो, मैं आपसे एक हार्दिक नम्र निवेदन करता हूँ, यदि आपने अभी तक ऋषि उद्यान के दर्शन नहीं किये तो एक बार अवश्य जायें, हो सके तो शिविरार्थी बन कर अन्यथा यूँ भी जायेंगे तो घाटे में नहीं रहेंगे। मैं आपको दावे से कह सकता हूँ कि आप वहाँ पहुँच कर उच्च कोटि के आनन्द का अनुभव करेंगे, क्योंकि कुछ चीजों का आनन्द न फोटो से लिया जा सकता है, न शब्दों से, मात्र प्रत्यक्ष देखकर ही सम्भव है। अत: आपसे पुन: अनुरोध करता हूँ कि इसे ऋषि ऋण एवं अपना कर्त्तव्य मान कर शीघ्रतिशीघ्र ऋषि उद्यान जाने का कार्यक्रम बनायें, धन्यवाद।

- नरेन्द्र वेदालंकार, मुम्बई

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- स्वामी सत्यपति परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा में दार्शनिक वैदिक विद्वान् व धर्माचार्य बनने हेतु इच्छुक आवेदन व सम्पर्क अवश्य करें। **प्रवेश के लिए योग्यता**- केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए, आयु १८ से अधिक हो, शैक्षणिक योग्यता न्यूनतम १२वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता), **विशेषताएँ**- वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ-साथ ११ उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेद भाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेद स्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, मनोनियन्त्रण, यम-नियम, ध्यान-समाधि, आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए ४-५ घण्टे मौन पालन का अवसर रहेगा। **सुविधाएँ**- प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित आवास, भोजन, बिस्तर, वस्त्र, घी, दूध, फल, पुस्तक आदि वस्तुएँ नि:शुल्क प्राप्त होंगी। **सम्पर्क**- ०७०२७०२६१७५, ०७०२७०२६१७६, ई-मेल- darshanyogsundarpur@gmail.com

२. कन्या गुरुकुल प्रवेश सूचना- आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, राजस्थान राज्य के अलवर जिले में साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरुकुल दिल्ली से १०० किमी एवं जयपुर से १५० किमी की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अत: आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। **विशेषताएँ**- कक्षा ६ से ९ तक तथा ११वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त। **सम्पर्क सूत्र**- ०१४९५-२७०५०३, ०९६७२२२३८६५

चुनाव समाचार

३. आर्य समाज भिलाई नगर, जि. दुर्ग, छ.ग. के चुनाव में **प्रधान**- श्री जितेन्द्र प्रकाश मल्होत्रा, **मन्त्री**- श्री रवि आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री भोजलाल आर्य को चुना गया।

४. आर्य समाज गिदड़बाहा, जि. मुक्तसर के चुनाव में **प्रधान**- श्री भागचन्द, **मन्त्री**- श्री हैपी बांसल, **कोषाध्यक्ष**- श्री हरिराम मित्तल को चुना गया।

वैवाहिक

५. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २७ वर्ष, कद- ६ फुट ६ इंच, शिक्षा- एम.ए. एम.एससी., वायु सेना में पायलट पद पर कार्यरत युवक हेतु केन्द्रिय विद्यालय में शिक्षिका पद पर कार्यरत, आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क**- ०९७१७२९६६४७

दक्षिण के कर्मवीर

आह! श्री रामचन्द्र वर्मा चल बसे

पुराने हैदराबाद स्टेट के एक वयोवृद्ध, कर्मठ और निष्काम समाज सेवी श्री रामचन्द्र जी वर्मा शोरापुर (कर्नाटक) निवासी ९६ वर्ष की आयु में चल बसे हैं। आपने भरी जवानी में आर्य समाज सेवा का व्रत लिया। श्री पं. नरेन्द्र जी, पं. वंशीलाल जी व्यास के चुम्बकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आर्य समाज के रक्तरंजित इतिहास के साक्षी बने। गुलबर्गा के ऐतिहासिक सम्मेलन के हत्याकाण्ड के आप साक्षी रहे। शोरापुर में सरदार पटेल की प्रतिमा लगाने के लम्बे अभियोग के एक अभियुक्त आप रहे।

समाज सुधार के क्षेत्र में आपकी सेवाएँ सदैव प्रेरणा देती रहेंगी। देवदासी कुप्रथा (वेश्यावृत्ति) के विरुद्ध सफल संघर्ष करते रहे। आर्यसमाज शोरापुर के संस्थापक व प्रधान रहे। आप बहुत स्वाध्यायशील, पुस्तक प्रेमी आर्य थे। उठते-बैठते, सोते-जागते समाज के हितों को सदा प्रमुखता देते थे। आपके सुपुत्र श्री डॉ. राधाकृष्ण जी वर्मा ने आपके पगचिह्नों पर चलते हुए आर्यसमाज की जो सेवा की है, वह सर्वविदित है। दलितोद्धार, समाज सुधार के कार्यों में सदा बढ़-चढ़कर भाग लेने वाले श्री रामचन्द्र जी वर्मा दक्षिण में आर्यसमाज की नींव का एक पत्थर थे। उनके

स्वामी दयानंद शोधपीठ खोलें

का. सं./नवज्योति, अजमेर

जिन महापुरुष महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम पर यह विश्वविद्यालय है, उसमें

उनके नाम पर भी शोधपीठ की स्थापना होनी चाहिए। जितने शिक्षक पदों की मंजूरी सरकार से मिली है, उन पर कैलेण्डर बनाकर भर्ती की जाए। राज्यपाल व कुलाधिपति कल्याण सिंह ने यह बात सोमवार को यहां महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कही। हालांकि उन्होंने अभी तक स्वामी दयानंद सरस्वती के नाम पर शोधपीठ खोलने पर नाराजगी तो नहीं जताई, लेकिन इतना जरूर कहा कि जिस महापुरुष के नाम पर यह विश्वविद्यालय है, जिन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया, वेदों की व्याख्या की, अंधविश्वासों को झकझोरा। उनके कार्यों पर शोध होना चाहिए और इसके लिए शोधपीठ की स्थापना की जानी चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को संबोधित करते कुलपति

एमडीएस यूनिवर्सिटी का 7वां दीक्षांत समारोह

हर कठिनाई अगले पायदान पर चढ़ने की सीढ़ी : राज्यपाल

एजुकेशन रिपोर्टर | अजमेर

1 को कुलाधिपति स्वर्ण पदक, 38 को स्वर्ण पदक और 68 को पीएचडी की दी गई उपाधि

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कल्याण सिंह ने कहा कि जीवन की हर कठिनाई अगले पायदान पर चढ़ने की सीढ़ी है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण है। चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा का मूल्यवान होना जरूरी है। शिक्षा के बिना जीवन में अंधेरा है। विद्यार्थी संकीर्ण सोच से ऊपर उठें। युग बदल रहा है, दुनिया बदल रही है और शिक्षा की पद्धति भी बदल रही है। बदलते युग और बदलती दुनिया में यदि बदलती शिक्षा पद्धति के अनुरूप हमने अपने आप को नहीं बदला तो हम बहुत पिछड़ जाएंगे। विज्ञान और तकनीक का युग है। इस युग में विशेष प्रयास करते हुए विद्यार्थियों में अभिरुचि का विकास करना होगा, तभी वे जीवन में तरक्की को छू पाएंगे।

सोमवार को कुलाधिपति कल्याण सिंह ने महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के 7वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि जिनके नाम से यह यूनिवर्सिटी है...महर्षि दयानंद सरस्वती, उन्होंने वेदों की व्याख्या की। उनके नाम पर, उनके जीवन और विचारों पर यहां शोध हो सके, इसके लिए महर्षि दयानंद सरस्वती शोधपीठ खोला जाना चाहिए। दीक्षांत समारोह में वाणिज्य संकाय की टॉपर कोमल को कुलाधिपति स्वर्ण पदक से नवाजा गया। वहीं अलग-अलग विषयों के कुल 38 टॉपर्स को स्वर्ण पदक और 68 को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। शेष | पेज 6 (पढ़ें सिटी फ्रंट पेज)

अजमेर. एमडीएस यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में गोल्ड मेडल देते राज्यपाल कल्याण सिंह साथ में कुलपति सोडाणी।

दैनिक नवज्योति १
एवं
दैनिक भास्कर २
में प्रकाशित
समाचार

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ अगस्त , २०१६ ३९५९/५९

स्वामी श्रद्धानन्द जी की तेलुगु जीवन-चरित्र के प्रसिद्ध लेखक और आन्ध्र भूमि दैनिक के सम्पादक श्री एम.वी.आर. शास्त्री संवाद करते हुए।

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

डाक टिकिट